



रेल राजभाषा

भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी को समर्पित



संपादकीय

प्रधान संपादक की कलम से.....



सामाजिक समरसता के अग्रदूत को नमन

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) में निदेशक (राजभाषा) का पदभार ग्रहण करने के पश्चात मेरे संपादकत्व में प्रकाशित होने वाले 'रेल राजभाषा' के 126 वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। 'रेल राजभाषा' का यह अंक भारतरत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर को समर्पित है।

डॉ. अंबेडकर समानता को लेकर काफी प्रतिबद्ध थे। उनका मानना था कि समानता का अधिकार धर्म और जाति से ऊपर होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना किसी भी समाज की प्रथम और अंतिम नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए। अगर समाज इस दायित्व का निर्वहन नहीं कर सके तो उसे बदल देना चाहिए। वे मानते थे कि समाज में यह बदलाव सहज नहीं होता है, इसके लिए कई पद्धतियों को अपनाना पड़ता है। आज जब विश्व एक तरफ आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है तो वहीं दूसरी तरफ विश्व में असमानता की घटनाएँ भी देखने को मिल रही हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि असमानता प्राकृतिक है, जिसके चलते व्यक्ति रंग, रूप, लम्बाई तथा बुद्धिमत्ता आदि में एक-दूसरे से भिन्न होता है। लेकिन समस्या मानव द्वारा बनाई गई असमानता से है, जिसके तहत एक वर्ग, रंग व जाति का व्यक्ति अपने आप को अन्य से श्रेष्ठ समझ संसाधनों पर अपना अधिकार जमाता है। भारत में इस स्थिति की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए संविधान के अंतर्गत अनुच्छेद 14 से 18 में समानता के अधिकार का प्रावधान करते हुए समान अवसरों की बात कही गई है। इस प्रकार अंबेडकर के समानता के विचार न सिर्फ उन्हें भारत के संदर्भ में, बल्कि विश्व के संदर्भ में भी प्रासंगिक बनाते हैं।

बाबासाहेब के जीवन पर गौर करें तो पता चलता है कि उनके सामाजिक चिन्तन में अस्पृश्यों, दलितों तथा शोषित वर्गों के उत्थान के लिए काफी संभावना झलकती है। वे उनके उत्थान के माध्यम से एक ऐसा आदर्श समाज स्थापित करना चाहते थे, जिसमें समानता, स्वतंत्रता तथा भ्रातृत्व के तत्व समाज के आधारभूत सिद्धांत हों। बाबासाहेब जिस प्रकार से आज प्रासंगिक होते जा रहे हैं वह शायद ही पहले कभी दृष्टिगोचर हुआ हो। क्योंकि आज सूचना प्रौद्योगिकी के अधुनातन साधनों के माध्यमों की उपलब्धता के कारण बाबासाहेब का साहित्य और उनका दर्शन जनमानस तक आसानी से पहुँच रहा है। उनके विचार आज किसी न किसी माध्यम से जनता तक सुलभ हो रहे हैं। बाबासाहेब की दूरदर्शिता भी उनको आज के समय में प्रासंगिता प्रदान करती है। अगर इनके विचारों को अमल में लायें तो समाज की ज्यादातर समस्याएँ जैसे वर्ण, जाति, लिंग, आर्थिक व धार्मिक सभी पहलुओं पर पैनी नजर रखी जा सकती है।

मैं इस अंक के सहयोगी रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके रचनात्मक सहयोग के कारण इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने विचारों, सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं। आप सबको मेरी ओर से शुभकामनाएं।

आपका

(विपिन पवार)

निदेशक. राजभाषा. रेलवे बोर्ड

रेल राजभाषा

संरक्षक

सुनीत शर्मा

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक
अधिकारी, रेलवे बोर्ड

श्रीमती उर्विला खाती
अपर सदस्य (कार्मिक)

मार्ग दर्शक

मनोज कुमार राम

कार्यपालक निदेशक, स्था. (आर.)

प्रधान संपादक

विपिन पवार

निदेशक राजभाषा, रेलवे बोर्ड

संपादक

नीरू पटनी

संयुक्त निदेशक, राजभाषा

उप संपादक

संतोष सनसनवाल

उप निदेशक, राजभाषा

सहायक संपादक

पुष्प लता माटा

सहायक निदेशक, राजभाषा

(पत्रिका)

मो. साबिर अली हसन सिद्दिकी

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,

राजभाषा (पत्रिका)

क्र.सं. शीर्षक

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक / रचनाकार
1.	हिंदी दिवस -2021 के अवसर पर गृहमंत्री जी का संदेश	
2.	हिंदी दिवस -2021 के अवसर पर रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री जी का संदेश	
3.	राजभाषा हिंदी के पक्षधर : डॉ० भीमराव अंबेडकर	- लेख विपिन पवार
4.	गर्वित हैं, हम हैं भारतीय रेल परिवार	-कविता विजय कुमार यादव
5.	डॉ० भीमराव अंबेडकर : कुछ अनछूए पहलू	- लेख उषा शर्मा
6.	बाबा साहेब ने "नीला रंग" ही क्यों चुना ?	- लेख विकास कुमार बघेल
7.	डॉ० अंबेडकर और महिला उत्थान	- लेख नवनीत कुमार,
8.	हे महामानव..!	- कविता किशोर एस. कुदरे
9.	द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ बाबा साहेब	-लेख राकेश कुमार मालवीय
10.	भारत रत्न का युवा स्वप्न	- कविता विवेक कुमार दीक्षित
11.	रेल मंत्रालय, में रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन	- एक रिपोर्ट
12.	दिनांक 25.05.2021 को रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड में आयोजित रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के दृश्य	
13.	जब बाबा साहेब ने अनुवादक नियुक्त कराया	-लेख सत्येंद्र सिंह
14.	"हमारी माटी का लाल: डॉ० भीमराव अंबेडकर"	-कविता कविता सिंह
15.	डॉ० भीमराव अंबेडकर -	-लेख नरेन्द्र सिंह गहलौत
16.	बाबा साहेब आपको समर्पित	- कविता पुष्पिंदर कौर
17.	17 जून 2021 को रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड में आयोजित मशीन आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर "कंठस्थ सॉफ्टवेयर" के प्रशिक्षण के दृश्य	
18.	30 जून 2021 को आयोजित रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 139 वीं बैठक के दृश्य	
19.	भारतीय रेल के सितारे जिन्होंने अन्य क्षेत्रों में भी अपनी चमक से देशवासियों को आलोकित किया	- लेख प्रज्ञेश वी. निंबालकर
20.	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा मडगांव रेलवे स्टेशन, कोंकण रेलवे की निरीक्षण संबंधी बैठक के दृश्य	
21.	भाषा की गरिमा अद्भुत और अनोखी है	- कविता डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

पता : राजभाषा निदेशालय, रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड), कमरा नं. 544, रेल भवन, रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली - 110001.

Email : dol@rb.railnet.gov.in



हिंदी दिवस 2021

के अवसर पर माननीय
गृहमंत्री जी का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष्य में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल ‘कंठस्थ’ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए ‘लीला हिंदी ऐप’,- *लैनिंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह ‘प्र’ की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह ‘प्र’ की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021


(अमित शाह)


आज़ादी का
अमृत महोत्सव

अश्विनी वैष्णव
Ashwini Vaishnaw



रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिकी और
सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
भारत सरकार
Minister of Railways
Communications & Electronics and
Information Technology
Government of India



हिंदी दिवस संदेश - 14 सितंबर, 2021

प्रिय साथियो,

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत विश्व में सर्वाधिक संस्कृतियों और भाषाओं वाला देश है। हिंदी इसमें निःसंदेह प्रमुख भाषा है। भारतीय रेल एवं हिंदी दोनों पूरे देश को एक सूत्र में पिरोए रखने में महत्वपूर्ण योगदान निभा रही है।

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए रेल मंत्रालय को वर्ष 2019-20 का तृतीय कीर्ति पुरस्कार तथा वर्ष 2020-21 का द्वितीय कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। सभी रेल कर्मी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

आज भारतीय रेल से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारीयां, सूचनाएं, आरक्षण चार्ट, रेलवे की वेबसाइट, ई-टिकट आदि में हिंदी के प्रयोग से आम जनता लाभान्वित महसूस कर रही है। 'रेल राजभाषा' मोबाइल एप भी एक और अनूठा कदम है जिसमें राजभाषा से जुड़ी सभी जानकारीयां उपलब्ध हैं।

आओ आज हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर सभी रेल कर्मी यह संकल्प लें कि हम सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे और राष्ट्र की उन्नति में भागीदार बनेंगे।

जय हिंद।

अश्विनी

(अश्विनी वैष्णव)

राजभाषा हिंदी के पक्षधर : डॉ० भीमराव अंबेडकर

लेख

कोई भी भाषा अपने आधारभूत रूप में सशक्त या अशक्त नहीं होती बल्कि वह नई परिस्थितियों, नई चुनौतियों एवं नए परिवेश के अनुरूप अपना स्वरूप तय कर अपने अस्तित्व एवं औचित्य को प्रमाणित करती है।

जब भारत के संविधान का निर्माण हो रहा था, तब जिन विषयों पर सबसे ज्यादा विचार-विमर्श किया गया, उनमें भाषाई आधार पर राज्यों का गठन एक प्रमुख मुद्दा था। इसका कारण यह था कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संपूर्ण देश में भाषाई चेतना का तेजी से विकास हुआ था। इसलिए स्वतंत्र भारत का पहला दशक देश के पुनर्निर्माण के साथ ही भाषाई विवाद के दशक के रूप में भी जाना जाता है। विवाद का विषय था-भाषाई आधार पर राज्यों का गठन। एक आंदोलन चलाया गया तथा प्रत्येक राज्य भाषा के आधार पर राज्य के गठन की वकालत करने लगा तथा ये लोग हिंदी को पूरे देश की भाषा के रूप में अपनाने के लिए तैयार नहीं थे। उस समय हमारा देश आजादी के बाद सामने आई समस्याओं के समाधान ढूँढने में इतना व्यस्त था कि उसने भाषाई अलगाववाद के मुद्दे पर विचार-विमर्श करना उचित नहीं समझा, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भाषाई गुट इतने सशक्त एवं आक्रामक हो चुके थे कि वे स्वतंत्रता के पश्चात अपनी बात मनवाने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। इसका कारण सिर्फ इतना ही था कि उनका अस्तित्व एवं उनकी राजनीति क्षेत्रीय भाषा पर ही निर्भर थी और यदि वे भाषा के आधार पर राज्यों का गठन नहीं करवा पाते, तो इससे उनकी स्थानीय विश्वसनीयता संदेह के घेरे में आ जाती। भाषाई विवाद को सुलझाने के लिए पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल एवं पट्टाभि सीतारमैया की एक समिति का गठन किया गया, जो जे.वी.पी. समिति के नाम से विख्यात हो गई। इस समिति का मत था कि 'भाषा केवल एक जोड़ने वाली ताकत नहीं है, बल्कि एक-दूसरे से अलग करने/तोड़ने वाली ताकत भी है।' उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में यदि हम भारतरत्न

डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के भाषा संबंधी विचारों का अध्ययन करते हैं तो हमें पता चलता है कि वे अपने समकालीन राजनेताओं, विचारकों एवं चिन्तकों से कितना आगे थे। भाषा के संबंध में डॉ. अंबेडकर के पास जबर्दस्त दूरदृष्टि थी। उनकी अपनी एक सोच थी। वे राजभाषा के मसले को राष्ट्रीय अखंडता से जोड़कर देख रहे थे।

स्वतंत्रता के पश्चात संविधान सभा का गठन हुआ, जिसकी प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. अंबेडकर थे। डॉ. अंबेडकर की अध्यक्षता में गठित इस प्रारूप समिति ने विश्व के समस्त संविधानों का गहन अध्ययन कर अपना संविधान सभा के समक्ष रखा। दिनांक- 04 नवंबर 1948 को बहस के पूर्व ही सेठ गोविंददास, आचार्य बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन', अलगूराय शास्त्री, आर.वी.धुलेकर, सुरेशचंद्र मजूमदार आदि सदस्यों ने संविधान की भाषा पर प्रश्न किया तथा सेठ गोविंददास, आचार्य बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एवं अलगूराय शास्त्री ने तो सबसे पहले राष्ट्रभाषा के सवाल पर बहस करने की मांग की। इस मांग को संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि राष्ट्रभाषा पर चर्चा पहले से ही 99वें क्रम पर निर्धारित की गई थी। अलगूराय शास्त्री ने संविधान की भाषा की तीखी आलोचना करते हुए कहा था कि "एक ऐसा देश, जिसकी अपनी भाषा है, वह एक विदेशी भाषा में अपना पहला, स्वतंत्रता का विधान बनाएं, यह एक बहुत ही लज्जाजनक बात होगी।" श्री एस.आर.धुलेकर हिंदी के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने मांग की कि संविधान सभा की समस्त कार्यवाही हिंदी में होनी चाहिए। इस पर जिस किसी सदस्य को आपत्ति हो वह सभा को छोड़कर बाहर जाने के लिए स्वतंत्र है।

डॉ. अंबेडकर राजभाषा विवाद के मुद्दे पर सीधे हिंदी का पक्ष लेने वालों के साथ नहीं थे। उन्होंने भाषाई आधार पर राज्यों के गठन के संदर्भ में आनुषांगिक रूप से राजभाषा हिंदी पर अपने विचार

प्रकट किए थे। 1948 में भाषावार राज्य आयोग के समक्ष उन्होंने अपना पक्ष रखा। उनके अनुसार भाषाई राज्य का अर्थ है, ऐसा राज्य जो जनसंख्या की दृष्टि से सजातीय हो और ऐसे सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुकूल हो, जो एक लोकतांत्रिक सरकार के लिए जरूरी है। उनके विचार से भाषाई राज्य का उस राज्य की भाषा से कोई सरोकार नहीं है। उन्होंने कहा कि - “संविधान में यह व्यवस्था होनी चाहिए कि हर राज्य की सरकारी भाषा वहीं हो जो केन्द्र सरकार की है।” उन्होंने कहा कि संघीय शासन में संविधान भाषा के आधार पर नहीं होना चाहिए। राज्यों की सरकारी भाषाओं के आधार पर उनका गठन खतरनाक है। इस तरह राज्य अलग राष्ट्र बन सकते हैं। एकता और राष्ट्रीय एकता के लिए सभी के लिए एक भाषा होना जरूरी है, वह है हिंदी। उन्होंने ‘एक भाषा अनेक राज्य’ फार्मूले का समर्थन किया था।

डॉ. अंबेडकर बहुभाषी राज्यों का गठन चाहते थे। अल्पसंख्यकों के हित संरक्षण के लिए उन्होंने सुझाव दिया था कि विभिन्न भाषाई राज्यों के सदस्यों की एक समिति बनाई जाए, जो राज्यपाल से अपील कर सके।

2 सितंबर 1953 को राज्यसभा में आंध्रप्रदेश के निर्माण का विधेयक प्रस्तुत किया गया। डॉ. अंबेडकर ने भाषाई आधार पर राज्य बनाए जाने वाले इस विधेयक का डटकर विरोध करते हुए कहा कि “अपने सिद्धान्त की सिद्धि के लिए पोर्टी श्रीरामुलु को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। यदि किसी दूसरे देश में ऐसा हुआ होता तो वहाँ की जनता ने सरकार की धजियाँ उड़ा दी होती।” अंत में डॉ. अंबेडकर ने हिंदी भाषा के प्रति अपनी सुरुचि प्रकट करते हुए कहा कि वास्तविकता यह है कि हिंदी भाषी लोग ही हिंदी के शत्रु हैं। उल्लेखनीय है कि मद्रास प्रदेश से पृथक आंध्रप्रदेश की स्थापना करने के लिए पोर्टी श्रीरामुलु ने 58 दिन तक अनशन किया और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए 1952 में अपने प्राणों की आहुति दे दी। पोर्टी श्रीरामुलु गांधीजी के पक्के अनुयायी थे तथा एक रेल कर्मचारी थे। रेलवे में नौकरी के दौरान ही श्रीरामुलु पर महात्मा गांधी के विचारों का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वे चार साल में ही रेलवे की नौकरी छोड़कर साबरमती आश्रम चले गए।

डॉ. अंबेडकर महाराष्ट्र के एकीकरण के विरुद्ध थे। उन्होंने कहा कि “मैं मराठी कहलाना तक पसंद नहीं करता।” संयुक्त महाराष्ट्र का आंदोलन एक गैर-दलीय संगठन ने चलाया था। डी.आर.गाडगिल, डी.वी. पोतदार, एस.ए.डांगे, देव और एम.आर. जयकर जैसे प्रमुख विचारकों एवं विद्वानों ने संयुक्त महाराष्ट्र परिषद के संगठन में सहयोग दिया। इस परिषद ने राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष अपना पक्ष रखा, लेकिन डॉ. अंबेडकर ने आयोग के समक्ष अपना अलग पक्ष प्रस्तुत किया। संयुक्त महाराष्ट्र के समर्थकों ने संयुक्त महाराष्ट्र समिति बनाई और द्विभाषी बंबई राज्य की स्थापना के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया। डॉ. अंबेडकर का दल शिङ्गूल कास्ट फेडरेशन इसमें शामिल था। उन्होंने कहा कि “द्विभाषी बंबई राज्य का बंटवारा किया जाए।” उन्होंने घोषणा की कि “मैं संयुक्त महाराष्ट्र और द्विभाषी बंबई राज्य के भी विरुद्ध हूँ।”

उन्होंने कहा कि भारत में भाषावाद साम्प्रदायिकता का दूसरा रूप है। महाराष्ट्र में मराठों का बाहुल्य है। जो शासक बनेंगे, वे मराठी भाषी नहीं, मराठा जाति के होंगे।” उनका यह मानना था कि मराठों के शासन में अल्पसंख्यकों विशेष रूप से अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जन जातियों के प्रति न्याय नहीं हो सकता।

भाषा के संबंध में डॉ. अंबेडकर के विचारों को जानने के पश्चात यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि डॉ. अंबेडकर त्रिभाषा सूत्र के समर्थक नहीं थे। ‘एक राज्य एक भाषा’ सूत्र का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा था उन्नत देशों ने इस सूत्र को लागू कर विकास की ऊँचाई हासिल की है। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि “भाषा संस्कृति की संजीवनी होती है। चूँकि भारतवासी एकता चाहते हैं और एक समान संस्कृति विकसित करने के इच्छुक हैं इसलिए सभी भारतीयों का यह भारी कर्तव्य है कि वे हिंदी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएँ। कोई भी भारतीय, जो इस प्रस्ताव को भाषावार राज्य के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार नहीं करता, भारतीय कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।”

सन 1955 तक डॉ. अंबेडकर को यह समझ में आ गया था कि देश में भाषा को लेकर प्रतिस्पर्धा और अलगाव का माहौल तैयार करने के प्रयास चल रहे हैं। इसलिए उन्होंने किसी भी प्रकार से प्रांतवाद का समर्थन नहीं किया।

प्रांतवाद आगे चलकर राष्ट्रवाद के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकता है। राष्ट्रीयता उनके लिए भावना की बात नहीं थी, बल्कि वे उसे व्यवहार में लाने के पक्षधर थे, जो किसी भी लोकतंत्र की सफलता का मूल मंत्र है। इसलिए उन्होंने कहा था कि "यदि राज्य में रहने वाले लोगों में भातृत्व की भावना का अभाव हो, तो लोकतंत्र बिना संघर्ष के चल ही नहीं सकता। नेतृत्व के लिए दो दलों में लड़ाई-झगड़े और प्रशासन में भेदभाव का व्यवहार ये दो तत्व किसी भी मिश्रित भाषावार (द्विभाषी) राज्य में सदा बने रहते हैं और उनका लोकतंत्र के साथ निर्वाह नहीं हो सकता।"

राजभाषा के संबंध में डॉ. अंबेडकर की मान्यताएं बड़ी सुस्पष्ट थी, जिनके आधार पर प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की भावना को आधार बनाते हुए देश की राजभाषा नीति का निर्माण किया गया।

-----*

संदर्भ-सूची :-

1. वरशिपिंग फॉल्स गॉड्स - अंबेडकर एंड दि फैक्ट्स, विच हैव बिन इरेज्ड - अरुण शौरी
2. डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर, राईटिंग्स एंड स्पीचेस, वाल्यूम 1 टू 14, एजुकेशन डिपार्टमेन्ट, गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र, बॉम्बे, 1979-95
3. भारत गांधी के बाद - रामचंद्र गुहा
4. बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर - संपूर्ण वाङ्मय
5. संविधान सभा और भाषा विमर्श - राजीव रंजन गिरि
6. महाराष्ट्र एज ए लिंग्विस्टिक प्रोविन्स - डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर
7. डॉ. अंबेडकर - ए क्रीटिकल स्टडी - डॉ. डब्ल्यू.एन. कुबेर
8. रिपोर्ट ऑफ जी.आई.पी. रेलवे डिप्रेस्ड क्लास वर्कमैन्स कांफ्रेंस, मनमाड (महाराष्ट्र) 1938

विपिन पवार

निदेशक (राजभाषा)
रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)

गर्वित हैं, हम हैं भारतीय रेल परिवार

-कविता

गर्वित हैं, हम हैं भारतीय रेल परिवार
भारत की जीवन रेखा का आधार
12 लाख समर्पित कर्मों का संसार
वाष्प, डीज़ल, विद्युत इंजन का वंशाधार

मुश्किल घड़ी में भी दे सर्वश्रेष्ठ योगदान
विपदा में "आक्सीजन एक्सप्रेस" करती प्रदान
यात्रियों की सेवा में तत्पर सदा संग मुस्कान
प्राण की आहुति देकर भी अक्षुण्ण अपनी पहचान

सस्ती, सुलभ, संरक्षित रेल परिवहन
कोटि कोटि यात्री करे आवागमन
दिन रात, आँधी, वर्षा हो प्रचालन
रेलवे का पूरा तंत्र, श्रम है पूरी लगन

गौरवशाली विरासत, विश्वास शासन का
उच्चतम मापदंड सदैव ही अनुशासन का
उम्मीदों का भार निभाते हम जनमानस का
काव्यांजली "विजय" का समर्पित प्रोत्साहन का

विजय कुमार यादव
मुख्य दक्षता निरीक्षक
मुख्यालय, मालीगांव गुवाहाटी

डॉ भीमराव अंबेडकर : कुछ अनछुए पहलू

लेख

भारत के संविधान के निर्माता, भारत रत्न भीमराव का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू केंट में हुआ था। जैसा कि नाम से स्पष्ट है “डॉ भीमराव रामजी आंबेडकर” इस नाम में इनकी माता-पिता और इनके गुरु के नाम भी जुड़े हुए हैं। इनकी माता का नाम श्रीमती भीमा तथा पिता का नाम श्री रामजी और आंबेडकर इनके एक ब्राह्मण गुरुजी के नाम थे। अंबेडकर जी ने देखा कि यह बच्चा सूर्य की तरह प्रकाशमान होगा, कहीं अस्पृश्यता की बेड़ियाँ इसे जकड़ न लें इसलिए उन्होंने अपने नाम कृष्ण केशव अंबेडकर में से ‘अंबेडकर’ इस बच्चे के नाम के आगे उपनाम के रूप में लगा दिया, जिससे उसे समाज की भलाई के काम करने में कभी कोई परेशानी न हो।

भीमराव जी अपने 14 भाई-बहनों में सबसे छोटे होने के कारण अपने माता-पिता की सबसे प्रिय सन्तान थे। इनकी दो पत्नियाँ थीं- रामाबाई और सविताबाई।

भीमराव जी को बचपन से ही पढ़ने का बहुत शौक था। इनके जीवन में किताबों का सबसे ज्यादा महत्व था। इन्होंने बोम्बे के एल्फिंसन कॉलेज से बी०ए० तथा कोलंबो विश्वविद्यालय व लंदन विश्वविद्यालय से एम०ए०, पी०एच० डी० की शिक्षा प्राप्त की थी। वह अपने समय के सबसे अधिक पढ़े-लिखे व्यक्तियों में माने जाते थे।

उनके बचपन की एक घटना ने उनकी सोच को बदलकर पढ़ाई के प्रति उन्हें दृढ़ निश्चयी बना दिया था। उनके स्कूल में अध्यापक उनसे कभी प्रश्नों के उत्तर नहीं पूछते थे। जब भीमराव उत्तर देना चाहते तो उनके अध्यापक कहते कि तुम पढ़ने के लिए नहीं हो बाहर बैठकर सुनते रहो, यही बहुत है। भीमराव को अध्यापकों की इस बात ने बहुत कचोटा और तब भीमराव ने विचार कर लिया कि कुछ भी हो जाए इस व्यवस्था को बदलना होगा।

भीमराव के पिताजी ने भी बचपन से ही इन्हें बहुत अच्छी किताबें पढ़ने के लिए दीं, जिसमें रवींद्रनाथ टैगोर की जीवनी का इनके जीवन पर बहुत बड़ा असर हुआ। जब यह लंदन से वापस आए तो भारत में अछूतों पर होने वाले अत्याचार से परेशान हो गए।

सन् 1931 ई. को गांधी जी से होने वाली मुलाकात में, गांधीजी के द्वारा खुद को अछूतों का हितैषी बताने पर भीमराव ने तर्क रखा कि अगर ऐसा होता तो आपने कांग्रेस में शामिल होने की शर्त अछूतों के साथ भोजन करना या उनके साथ बैठना रखा होता न कि खादी पहनना।

मशहूर किताब इंसाइट एशिया के लेखक जॉन लूथर ने लिखा है- सन् 1938 ई. में मेरी राजगृह में अंबेडकर से मुलाकात हुई, तब उनके पास 8000 किताबें थी, जिनकी संख्या उनकी मृत्यु तक 35000 हो गई। वे अपनी किताबें किसी को भी पढ़ने के लिए नहीं देते थे। उनका कहना था कि अगर किसी को किताब पढ़नी है तो उसे मेरी लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ना चाहिए।

पढ़ाई के प्रति उनमें इतनी आसक्ति थी कि वे रात से सुबह तक किताबों में लीन रहते थे। उनको बागवानी का भी अद्भुत शौक था। उनके बागवानी के शौक का यह हाल था कि दिल्ली में उनसे अच्छा और दर्शनीय बगीचा किसी के पास नहीं था। एक बार ब्रिटिश अखबार डेली मिल ने भी उनके बगीचे की तारीफ की थी। उन्हें अपने आप खाना बनाना भी पसंद था। उनके साथ काम करने वाले देवीदयाल जी लिखते हैं कि उन्हें पाकशाला का भी बहुत शौक था।

3 सितंबर 1944 ई. को उन्होंने अपने हाथ से खाना बनाया और भोजन में सात पकवान बनाए और दक्षिण भारत अनुसूचित जाति फेडरेशन की प्रमुख “मीनाम्बल सिवराज” को बुलाया। वह इस बात को जानकर हैरान

रह गई कि भारत की “एज्युकेटिव काउन्सलिंग” के लेवर सदस्य ने उनके लिए अपने हाथों से खाना बनाया है।

सन् 1920 ई. में भीमरावजी ने “मूकनायक” नामक साप्ताहिक पत्र निकाला जिससे लोग उनकी विचार धारा को जान सकें। इसके साथ ही इन्होंने ‘संगठित प्रयास’ दलितों के लिए प्रारम्भ किया और “बहिष्कृत हितकारिणी सभा” के नाम से एक संगठन बनाया। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य था कि सभी को शिक्षा दो। भीमरावजी मानते थे कि हम अपने समाज को शिक्षित करेंगे और उसे आगे बढ़ायेंगे। उनका मानना था कि शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिससे समाज उन्नति करेगा।

इन्होंने बहुत सी किताबें लिखीं। पाकिस्तान के ऊपर भी उन्होंने किताबें लिखी और “वेटिंग फॉर ए वीजा” नाम से अपनी आत्मकथा भी लिखी।

सन् 1946 ई. में “who were the shudra” नामक किताब में उन्होंने स्पष्ट किया कि शूद्र कोई जाति नहीं थी। पहले ये भी केवल क्षत्रिय थे बाद में इन्हें अलग कर दिया गया।

“के०वी०राव” ने भीमरावजी को संविधान सभा के जनक व जननी दोनों का ही दर्जा दिया था।

अंबेडकर ने संविधान के लिए होने वाले चुनाव में बंबई से अपना नाम दिया तो वह हार गए और बाद में यह आज के बांग्लादेश से वह चुनाव जीत गए।

29 अगस्त 1947 में यह प्रारूप समिति के सात सदस्यों में से एक थे। 25 सितंबर 1932 में पूना पेक्ट हुआ जिस पर अंबेडकर जी और मदन मोहन मालवीय जी के हस्ताक्षर हैं जबकि सारी बातें गांधीजी की हैं परंतु हस्ताक्षर का अधिकार गाँधीजी को नहीं मिला था।

साइमन कमीशन के सहयोगी सदस्यों में भी इन्हें सदस्य बनाया गया। इन्होंने “भारत छोड़ो आंदोलन” का विरोध भी किया था। अंबेडकर जी भारत में पहले कानून मंत्री बनें।

आजादी के बाद एक बार फिर इन्हें लोकसभा

के चुनावों में हार प्राप्त हुई परंतु अंबेडकर जी हार मानने वालों में नहीं थे अतः यह राज्यसभा चुनाव में खड़े हुए और जीतकर मंत्री बनें।

देश की एकता के लिए इन्होंने औरतों के लिए, बहुत काम किए।

एक घटना है कि उस समय इनकी कॉलोनी में एक तलाब था। उस पर नगर पालिका ने आदेश कर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को पानी पीने का अधिकार है लेकिन सवर्ण जाति के लोग इन लोगों को पानी नहीं पीने देते थे तो अंबेडकर जी ने इसका जमकर विरोध किया और अपनी जाति को समान अधिकार दिलाने के लिए बहुत लड़ाइयाँ लड़ी। अंत में कानूनी रूप से दलितों को समान अधिकार दिलाए।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंबेडकर के विषय में जानने के बाद उन्हें याद करने का सबसे बड़ा कारण होना चाहिए वह यह हैं कि कैसे कोई व्यक्ति खराब परिस्थितियों में भी उभरकर एक ऐसा मुकाम हासिल करे कि वह देश के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम अंकित कर जाए यह क्षमता किसी-किसी में ही होती हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण डॉ भीमराव अंबेडकर हैं।

उषा शर्मा

ई-45, महा विद्या कॉलोनी,
मथुरा 281001

हिंदी हमारे राष्ट्र की
अभिव्यक्ति का स्रोत है

-सुमित्रानन्दन पंत

बाबा साहेब ने "नीला रंग" ही क्यों चुना ?

लेख

ये उत्सुकता का विषय है कि बाबा साहेब को नीला रंग ही क्यों पसंद है, उनकी प्रतिमा हमेशा नीले रंग के कोट-पैट में दिखती है साथ ही उनके हाथ में दिखाई देने वाली संविधान पुस्तक और दूसरे हाथ की एक अंगुली उठी हुई दिखती है जो कि आगे बढ़ने का सूचक है । इसके अलावा उनके अनुयायियों में भी हमेशा नीले रंग की पगड़ी या गले में डालने वाला कपड़े का भी रंग नीला ही होता है ।

यह भी सोचने वाली बात है कि दलितों के संघर्ष का रंग नीला क्यों है । जब पूरे देश में दलितों ने एससी/एसटी एक्ट पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ संघर्ष किया तो रैलियां नीले रंग के झंडों और टोपियों से पटी पड़ी थीं । जब भी दलितों का कोई मार्च या रैली निकलती है, तो उसमें एक रंग दिखता है और वो है नीला । नीला रंग दलितों के प्रतिरोध, संघर्ष और अस्मिता का रंग बनकर उभरा है जोकि उनकी एक अलग पहचान को दर्शाता है ।

ये कैसे शुरू हुआ : "1942 में बाबा साहेब ने शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया पार्टी की स्थापना की थी. उस पार्टी के झंडे का रंग नीला था और उसके मध्य में अशोक चक्र स्थित था...इसके बाद 1956 में जब पुरानी पार्टी को खत्म कर रिपब्लिकन पार्टी का गठन किया गया तो इसमें भी इसी नीले रंग के झंडे का इस्तेमाल किया गया." "उन्होंने ये रंग महाराष्ट्र के सबसे बड़े दलित वर्ग महार के झंडे से लिया" उन्होंने तब इसे दलित चेतना का प्रतीक माना था ।

दलितों ने नीले रंग को किस वजह से अपनाया:

बी.आर अंबेडकर जी को नीले रंग का सूट बहुत पसंद था । वो अमूमन इसी रंग के श्री पीस सूट पहनते थे । अंबेडकर को दलित अपने नायक के रूप में देखते हैं । एक ऐसा नायक, जिसने नीचे से उठकर उनके समाज को आवाज दी । समाज को संगठित किया । चूंकि अंबेडकर नीले रंग के सूट में होते थे,

लिहाजा दलित समाज ने इस रंग को अपनी अस्मिता और प्रतीक के रूप में लिया । उन्होंने इस रंग को अपनाया । देशभर में अंबेडकर की जितनी भी मूर्तियां लगी हैं उसमें वो नीले रंग का ही श्री पीस सूट पहने और हाथ में संविधान की प्रति लिए हुए दिखते हैं ।

अंबेडकर के साथ इस रंग के जुड़ने का मतलब था इस रंग को दलित समाज द्वारा अंगीकृत कर लेना । ये रंग इसीलिए दलितों के लिए उनका रंग बन गया । उनकी पहचान के साथ जुड़ गया । दलित चिंतक भी यही मानते हैं कि अंबेडकर के नीले सूट का रंग एक बड़ी वजह है कि दलितों ने इसे प्रतिरोध और अस्मिता के तौर पर अपनाया ।

कब होता है नीले रंग का इस्तेमाल :

जब भी उन्हें लगता है कि उनके साथ अन्याय हो रहा है तो उनकी रैलियों में नीले रंग के झंडे लहराते हैं. जब वो अपनी अस्मिता की बात करते हैं तो नीले रंग के झंडों को लहराते हैं. यानि उनके लिए हर मौके का प्रतीक बन गया है नीला रंग.

अंबेडकर को नीला रंग क्यों पसंद था:

"नीला रंग बाबा साहेब का प्रिय कलर था और निजी जीवन में भी वह इसका खासा इस्तेमाल करते थे." शायद इसकी वजह उनका बौद्ध धर्म से प्रभावित होना था । बौद्ध धर्म में नीले रंग को पवित्र रंग माना जाता है । अशोक चक्र का रंग नीला है और बौद्ध धम्म चक्र भी नीले रंग का है ।

नीले रंग के पीछे अवधारणा क्या है :

बाबा साहेब ने बहुत ही गहन अध्ययन एवं सोच-समझ कर नीले रंग का चुनाव किया है वो जानते थे नीला रंग आसमान का रंग है, ऐसा रंग जो भेदभाव से रहित दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है । जो ये बताता है कि आसमान के तले हर किसी को बराबर होना चाहिए । ये एक थ्योरी है लेकिन इसका कोई पुख्ता आधार नहीं । इसके पीछे यह भी तर्क दिया जा सकता है कि संपूर्ण जगत में नीले रंग की अधिकता है । धरती पर 75 प्रतिशत फैले जल के कारण नीले रंग का प्रकाश ही फैला हुआ है तभी तो हमें आसमान नीला

दिखाई देता है। नीला रंग जल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए जल तत्व के सारे गुण इसमें समाहित हैं। नीला रंग अध्यात्म और भाग्य से संबंध रखता है। मानते हैं कि नीला रंग आत्मा का रंग है। नीले रंग के प्रकाश के रूप में आत्मा ही दिखाई पड़ती है और आत्मा की उपस्थिति को सूचित करता है। जब व्यक्ति ध्यान करने लगता है तो अंधेरे में कहीं लाल, सफेद और नीला एवं पीला रंग दिखाई देने लगता है जब वह ज्यादा समय तक उन रंगों को देखता रहता है तो उसे सबसे ज्यादा नीला रंग दिखाई देने लगता है जोकि उसके मस्तिष्क को शांत रखने का प्रयास करता है।

इसके पीछे और भी तर्क दिए जा सकते हैं कि बैंगनी रंग या नीले रंग की सब्जियां एवं फल हमारे खाने-पीने एवं स्वास्थ्य में बड़ी भूमिका निभाती है। यह हृदय रोगियों के लिए फायदेमंद होता है और कैंसर की संभावना को भी कम करने में सहायक है। तथा नीला रंग ब्लड प्रेशर के मरीजों के ब्लड प्रेशर को सामान्य रखने में सहयोगी सिद्ध होता है। अक्सर देखा गया है कि अस्पतालों गहनकक्ष (आई.सी.यू.) में पर्दे, बैड एवं दीवारों के रंगों को हल्का नीला रखा जाता है क्योंकि यह गंभीर मरीजों के अंदर एक नई उम्मीद एवं हताशा को दूर करता है।

बाबा साहेब के अनुयायी अपने घरों को भी नीले रंग से पोतते हैं उनका मानना है कि उसमें रहने वाले सदस्यों को स्वास्थ्य लाभ कराता है, चिंता से मुक्ति कर देता है और आर्थिक एवं बौद्धिक प्रगति प्रदान करता है। नीला रंग सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है। यह रंग स्वास्थ्य, विचार, विश्वास, दयाभाव की तरफ सकारात्मक संकेत देता है। गहरा नीला रंग शयनकक्ष में इस लिए कराते हैं जिससे उन्हें तनाव मुक्त, गहरी और सुकूनभरी नींद प्राप्त हो। इसके अलावा वैज्ञानिक कारण भी यह देखा गया है कि नीले रंग से बैक्टीरिया और मच्छर दूर रहते हैं, इसलिए वे अपने घरों के अंदर और बाहर की दिवारों पर नीले रंग की पुताई करते हैं।

यह भी देखा गया है कि हल्का नीला रंग उन लोगों के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध होता है, जो साहित्य एवं सृजनात्मक कार्यों से जुड़े हैं। यह रंग उन्हें नए आइडिया को प्रोत्साहित करता है और रंगों के माध्यम से व्यक्ति में सीखने और खोजने की इच्छा

जागृत करता है। वे यह भी तर्क देते हैं कि नीला रंग व्यक्ति की इच्छापूर्ति, स्फूर्ति एवं आत्मविश्वास पैदा करने में मदद करता है और उसके ठहरे हुए व्यवसाय, करियर या निजी संबंधों को फिर से सक्रिय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राजनीति में भी नीला रंग पार्दुपण कर अपने प्रभाव को दर्शाता है जिस प्रकार से अन्य राजनैतिक पार्टियों ने अलग-अलग रंगों को अपनाकर एक विशेष पहचान हासिल की है उसी प्रकार आज नीला रंग राजनैतिक एवं विश्व पटल पर अपना विशेष महत्व एवं पहचान रखता है। राजनीति में रंगों का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है प्रत्येक पार्टियां अपने - अपने पंसद के रंगों का चुनाव करके एक अलग पहचान बना चुकी है जिसमें नीला रंग भी अपनी ख्याति को प्राप्त कर चुका है।

देश की विभिन्न पार्टियों के विभिन्न रंग

1. भगवा - भारतीय जनता पार्टी और हिंदुवादी दलों का रंग
2. आसमानी नीला - कांग्रेस
3. लाल-हरा- समाजवादी पार्टी का रंग
4. लाल - कम्युनिस्ट पार्टियों का रंग
5. गहरा नीला - बहुजन समाज पार्टी और दलित दलों का रंग
6. हरा- अन्ना द्रमुक का रंग
7. समुद्री नीला - एनसीपी
8. नीला और सफेद - तृणमूल कांग्रेस
9. तेलुगुदेशम (आंध्र)- पीला
10. नेशनल कांफ्रेंस (जम्मू-कश्मीर) - लाल

रंग और विचारधारा

1. लाल - समाजवाद
2. नीला - दलित
3. भगवा - हिंदू
4. हरा - इस्लाम
5. काला - विरोध

विकास कुमार बघेल
वरिष्ठ अनुवादक
कर्षण मशीन कारखाना,
मध्य रेल, नाशिक रोड

डॉ. अंबेडकर और महिला उत्थान

--लेख

प्राचीन भारत में महिलाएं पुरुषों के समान जीवन व्यतीत करती थीं। अपाला, लोपमुद्रा, इंद्राणी, यामी, संचमित्रा, चारुमति आदि महिलाओं को उनकी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक बुद्धिमत्ता के लिए जाना जाता है, जबकि उत्तर वैदिक काल में महिलाओं को विभिन्न आचार-संहिता और जाति-प्रथा के कठोर नियमों द्वारा प्रताड़ित किया गया। स्त्री पहले पिता, फिर पति और बाद में पुत्र की जिम्मेदारी बनकर रह गई। परिणाम-स्वरूप शिशु-हत्या, बाल-विवाह, सती-प्रथा, देवदासी-प्रथा, दहेज-प्रथा जैसी अनेकों कुरतियों ने अपनी जगह बना ली और इससे स्त्री-पुरुष समानता को गहरा आघात पहुंचा।

मध्यकाल में भारत में पर्दा-प्रथा, बहु-विवाह और पुनर्विवाह प्रतिबंध ने सामाजिक व्यवस्था को और दयनीय बना दिया और इसे दयावर बनाए रखने के मनुवादी कानून और परंपराओं ने इसमें सुधार की गुंजाइशों को समाप्त करने में अग्रिम भूमिका निभाई।

डॉ. अंबेडकर द्वारा इन दमनकारी, कठोर, जातिगत, श्रेणीगत व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई और महिलाओं की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया, जिसमें उन्होंने विवाह-संबंधी, दत्तक-ग्रहण, संपत्ति के बंटवारे, महिला-संपत्ति, उत्तराधिकारी, तलाक, विधवा-विवाह जैसे अनेकों प्रावधानों का कानूनी मसौदा तैयार किया तथा महिलाओं के लिए शिक्षा, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता संबंधी अधिकार दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1951 में उन्होंने कैबिनेट से इसलिए ही इस्तीफा दे दिया था क्योंकि संसद में उनके द्वारा पेश किए गए बिल के मसौदे को रोक दिया था, जबकि वह महिलाओं और समाज के लिए समानता की लड़ाई लड़ रहे थे आज वही मसौदा धीरे-धीरे भारतीय संविधान में जगह ले चुका है।

डॉ. अंबेडकर जीवन-पर्यन्त दलित जातियों और महिलाओं की दुख-तकलीफों का निवारण कर उन्हें बुलंद आवाज दे सके। पूरा देश उनका आभारी है और हमें उनके सपनों का आधुनिक भारत बनाने में प्रयासरत रहना चाहिए।

नवनीत कुमार,

सीनियर सेक्शन इंजीनियर, कैरेज एंड वैगन,
नई दिल्ली रेलवे स्टेशन।

हे महामानव..!

-कविता

आधुनिक भारत के हो, हे भीमराव तुम ही निर्माता।
तुम दार्शनिक, अर्थशास्त्री, तुम हो सुधारक, पीड़ितों के विधाता..

हे प्रचंड बुद्धिमत्ता, प्रखर तुम्हारी स्मरण शक्ति,
मानव हित में समर्पित, अदम्य तुम्हारी देशभक्ति,
संचर्षित, साहसिक तुम्हारी, है सामाजिक दूर दृष्टि,
तुम्हारे कारण स्वतंत्र और सजीव मानव सृष्टि,
तुम समता, बंधुभाव, स्वाभिमान के हो दाता....

आधुनिक भारत के हो, हे भीमराव तुम ही निर्माता।
तुम विधान, संविधान, तुमने लोकतंत्र किया बलवान,
हे महामानव, काम में आया, इसमें तुम्हारा सर्वोच्च ज्ञान,
कड़े परिश्रम से पीड़ितों के लिए, किया आंदोलन संग्राम,
हे भारत रत्न, ऋणी तुम्हारे, देश को तुम पर है अभिमान,
धन्य तुम्हारी जननी और धन्य है भारत माता...

आधुनिक भारत के हो, हे भीमराव तुम ही निर्माता।
हे शोषितों के प्रतिनिधि तुम्हारा, दृढसंकल्पित व्यक्तित्व,
तुम्हारे कारण ही मौजूद है, जन-कल्याण का अस्तित्व,
समानता के प्रहार से की, तुमने धार्मिक गुलामी ध्वस्त,
मानवतावादी, हितकारक तुम हो, करुणाशील बोधिसत्व,
त्याग तुम्हारे, सहभाग से मिली, शोषितों को प्रतिष्ठा....

आधुनिक भारत के हो, हे भीमराव तुम ही निर्माता।
तुम दार्शनिक, अर्थशास्त्री, तुम हो सुधारक, पीड़ितों के विधाता..

किशोर एस. कुदरे

वरिष्ठ अनुवादक, महाप्रबंधक कार्यालय,

मध्य रेल, मुंबई छ.शि.ट.

द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ बाबा साहब

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन के अनेक आयाम हैं, जिन्हें शब्दों में बयान करना संभव नहीं है। उनका संघर्ष अतुलनीय है। प्रस्तुत लेख उनके जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं को उजागर करने का एक प्रयास मात्र है। उनका व्यक्तित्व बहुत व्यापक, विस्तृत एवं बहुआयामी था। ऐसा कोई एक मापदंड नहीं है, जो उनके व्यक्तित्व को परिभाषित कर सके। डॉ. अंबेडकर अग्रिम पंक्ति के समाज सुधारक, अर्थशास्त्री, धर्मशास्त्री, इतिहासविद्, मानवविज्ञानी, विधिवेत्ता, श्रमिक नेता, राजनीतिज्ञ, वक्ता, शिक्षाविद्, प्रोफेसर, लेखक, संपादक, पत्रकार, बोधिसत्व एवं भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी थे।

बाबा साहब का वंश - बाबा साहब 'महार' जाति से संबंधित थे। जो महाराष्ट्र की एक अछूत जाति है। इतिहासकारों के मतानुसार महाराष्ट्र का मतलब है - "महारों का राष्ट्र"। महार जाति के नाम पर ही महार राष्ट्र या महाराष्ट्र नाम पड़ा। डॉ. अंबेडकर के दादा मालोजी राव सकपाल अंग्रेजी सेना में हवलदार एवं पिता रामजीराव सकपाल सूबेदार मेजर के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। यह वही पेशवाई का दौर था जब अछूत वर्ग के गले में हांडी और पीठ पर झाड़ू लटकाने जैसा काला कानून समाज के तथाकथित सभ्य लोगों द्वारा बनाया गया था। जिल्लत के सौ दिन से इज्जत का एक दिन अच्छा। इसी सोच के साथ महारों ने अपने आत्म स्वाभिमान के लिए अंग्रेजी सेना में भर्ती होना सुनिश्चित किया। महारों की शौर्य गाथा का बखान करता 'भीमा कोरेगांव' का युद्ध 01 जनवरी, 1818 में मराठा पेशवा बाजीराव द्वितीय और महार रेजीमेंट (ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी) के बीच लड़ा गया। एक तरफ पेशवाओं की 28,000 सैनिकों की बड़ी सेना और दूसरी तरफ मात्र 834 सैनिकों (जिनमें से 500 महार थे) की छोटी-सी टुकड़ी। लगभग 12 घंटे चले इस युद्ध में महारों ने पेशवाओं को धूल चटा दी। इसलिए महारों के वंशज इस युद्ध को अपने पूर्वजों के इतिहास का एक प्रकरण मानते हैं।

डॉ. भीमराव का जन्म एवं परिवार - 1891

के दशक में भारत में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्रांति के बीज जड़ पकड़ चुके थे। इसी काल में अछूतों के मुक्तिदाता के रूप में डॉ. भीमराव का जन्म किसी विशेष सामाजिक क्रांतिकारी के आगमन का शुभ सूचक था।



डॉ. भीमराव का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महू छावनी जिला इंदौर (मध्यप्रदेश) में सुबेदार रामजीराव सकपाल एवं माता भीमाबाई की 14वीं संतान के रूप में हुआ। माता भीमाबाई डॉ. अंबेडकर को प्यार से 'भीवा' पुकारती थी। भीमराव के 13 भाई-बहनों में से चार बहनें गंगा, रमा, मंजुला और तुलसा तथा दो भाई बालाराम एवं आनंदराव ही जीवित रह सके। बाकि सब अल्प आयु में ही मृत्यु को प्राप्त हुए। आपका परिवार मूलतः महाराष्ट्र राज्य के रत्नागिरी जिले के खेड तहसील में दापोली के पास आम्बावडे नामक गाँव के निवासी थे। आपके पैतृक गाँव आम्बावडे पर ही आपका नाम "अंबेडकर" पड़ा। उनकी सभी बहनों का विवाह सैन्य परिवार में हुआ। भाई बालाराम सेना में भर्ती हुए वहीं आनंदराव ने रेलवे में नौकरी की।

डॉ. भीमराव की प्रारंभिक शिक्षा - 7 नवंबर, 1900 में भीमराव को सातारा के प्रताप सिंह हाई स्कूल में दाखिला मिला। अछूत महार होने के कारण भीमराव को बचपन से ही जातिवाद, छुआछूत व भेदभाव का शिकार होना पड़ा। उन्हें स्कूल में दाखिला भी कुछ

अमानवीय शर्तों पर ही मिला था जैसे कि बिछाने के लिए टॉट-पट्टी घर से ही लानी होगी। भीमराव ब्लैक बोर्ड को छू नहीं सकेगा। स्कूल में रखे मटके से स्वयं पानी नहीं पी सकेगा। चपरासी या कोई ऊंची जाति का बालक ऊंचाई से ही पानी पिलाएगा। सवर्ण बच्चों के साथ खेलना, खानपान वर्जित होगा। कक्षा के बाहर बैठकर ही शिक्षा ग्रहण करनी होगी हालांकि कुछ दिनों बाद भीमराव को कक्षा में बैठने की इजाजत मिली परंतु उन्हें सवर्णों के बच्चों से 10 फिट दूर एक कोने में बैठना पड़ता था। एक बार गणित के शिक्षक ने सब बच्चों को एक सवाल हल करने को कहा परंतु कोई बच्चा सवाल हल न कर सका। जब भीमराव ने सवाल हल करने का अनुरोध किया और जैसे ही वह ब्लैक बोर्ड के पास पहुंचे। कक्षा में भारी शोर शराबा मच गया। गुरु जी...गुरु जी...भीमराव को रोको, कारण था- ब्लैक बोर्ड के पास सवर्ण बच्चों के खाने के डिब्बे रखे थे। बच्चों ने तुरंत अपने डिब्बे हटाए तब भीमराव सवाल हल कर सके। बालक भीमराव के मन में हमेशा एक प्रश्न उठता था कि “एक मानव के साथ दूसरा मानव ऐसा बर्ताव कैसे कर सकता है।” परंतु इसका जवाब किसी के पास नहीं था। पग-पग पर तिरस्कार के कड़वे घूंट पीने के बाद भी उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी।

डॉ. भीमराव की उच्च शिक्षा - सन् 1907 में भीमराव अंबेडकर ने मैट्रिक की परीक्षा (750 में से 392 अंक) उत्तीर्ण की। उस समय वह अपनी जाति के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। अतः भीमराव के लिए एक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सत्यशोधक आंदोलन के नेता, शिक्षक एवं रामजी सकपाल के मित्र दादा कृष्णराव अर्जुन केलुस्कर ने भीमराव को अपनी स्वरचित मराठी पुस्तक ‘बुद्ध चरित्र’ सम्मान स्वरूप भेंट की। बाबा साहब पर बचपन से ही बुद्ध का प्रभाव रहा था। उनके तीन गुरु हुए भगवान गौतम बुद्ध, संत कबीर और सत्यशोधक समाज के संस्थापक महात्मा ज्योतिबा फूले।

दादा केलुस्कर ने ही भीमराव की भेंट बड़ौदा रियासत के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ से कराई थी। उनके द्वारा दी गई छात्रवृत्ति से ही भीमराव ने 1912-13 में मुंबई के एलिफिस्टन कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा पास की और एम.ए. के लिए अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। 1915 में बाबा साहब ने एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे चलकर कोल्हापुर के छत्रपति साहू जी महाराज एवं बड़ौदा महाराज की मदद से इंग्लैंड, अमेरिका एवं जर्मनी आदि देशों से एम.ए., एम.एस.सी, पीएचडी, डीएससी, डी. लिट, एलएलडी एवं बार एट लॉ व डॉक्टरेट की अनेक मानद उपाधियों सहित कुल 32 डिग्रियां हासिल की।

बाबा साहब की संकल्प भूमि - 21 अगस्त, 1917 को भीमराव लंदन से बम्बई पहुंचे और छात्रवृत्ति के इकरारनामा के अनुसार नौकरी करने के लिए बड़ौदा चले गए। महाराजा ने उन्हें ‘सेना सचिव’ नियुक्त किया। विदेश से डिग्रियां लेने के बावजूद जातिवाद ने बाबा साहब का पीछा नहीं छोड़ा। रियासत का चपरासी भी फाइल हाथ में देने की बजाए दूर से ही फेंककर देता था। कोई उन्हें पानी नहीं पिलाता था। उनकी कुर्सी अलग दूर होती थी। पूरे बड़ौदा शहर में उन्हें रहने के लिए एक कमरा तक नहीं मिला। मजबूरीवश उन्हें एक नकली नाम एदल सोराबजी नाम से एक पारसी धर्मशाला में ठहरना पड़ा परंतु शीघ्र ही राज खुल गया और वहां से भी उन्हें निकाल दिया गया। 23 सितंबर, 1917 को एक वट वृक्ष के नीचे रात बितानी पड़ी। भूख-प्यास से व्याकुल डॉ. भीमराव फफक-फफक कर रोते हुए चिंतन मनन करने लगे कि “ इस देश में मेरे जैसा उच्च शिक्षा प्राप्त एवं विद्वान इतना अपमानित किया जाता है तो मेरे समाज के गरीब, पिछड़े, अनपढ़ लोगों की क्या हालत होती होगी। तभी डॉ. अंबेडकर ने संकल्प लिया कि “ मैं ऐसी व्यवस्था को बदल डालूंगा, जिसके कारण देश में अछूत वर्ग गुलाम है। उनका जीवन जानवरों से भी बदतर है। मैं शोषित समाज के उत्थान एवं मुक्ति के लिए जीवनभर कार्य करूंगा तथा सामाजिक विषमताओं

को मिटाने के लिए आजीवन संघर्ष करूंगा।” यह स्थान आज ‘संकल्प भूमि’ के नाम से जाना जाता है। अतः भीषण सामाजिक विषमताओं, अस्पृश्यता, ऊँच-नीच एवं भेदभाव से पीड़ित होकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी।

बाबा साहब का पुस्तक प्रेम - एक बार डॉ. भीमराव 500 रुपये की पुस्तकें खरीद लाए। रमाबाई को पुस्तकें दिखाई और एक पुस्तक पढ़ने लग गए। उधर रमाबाई ने खाना परोसा और खाना खाने के लिए कहा। उस समय पुस्तक के 2-3 पृष्ठ बाकी बचे थे। डॉ. अंबेडकर पूरी पुस्तक पढ़कर ही भोजन करना चाहते थे। इधर रमाबाई पुस्तकों को देख रही थी और मन में राशन की चिंता सता रही थी। पुस्तक खत्म होने के बाद रमाबाई ने बाबा साहब से कहा - आप 500 रुपये की पुस्तकें खरीद लाए। आपको घर में आटा, नमक, तेल, सब्जी आदि का भी तो ध्यान रखना चाहिए। अपने बच्चों की तरफ भी तो देखो। इस बात का बाबा साहब के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

दूसरे दिन कोर्ट से आते समय बाबा साहब बहुत सारी सब्जियां खरीद लाए। बड़े दिनों बाद घर में सब्जी आते देखकर रमाबाई बहुत खुश हुईं परंतु यह सोचकर बड़ी दुखी भी हुई कि 2-3 दिन बाद सब्जियां सड़ जाएंगी। क्योंकि बाबा साहब को पता नहीं था कि घर में कितनी सब्जी लगती है। उन्होंने भोजन करने में कभी कोई शिकायत नहीं की। उनका मिशन तो अपने करोड़ों दलित भाई-बहनों के उद्धार के लिए काम करना था। रमाबाई भी कर्मठता की मूर्ति थी। वह अपने पति के सभी कार्यों में यथा संभव सहयोग करती थी। आगे चलकर बाबा साहब ने पुस्तकों के लिए बम्बई में राजगृह (पुस्तकों के लिए घर) बनवाया।

भीमराव बने बाबा साहब - डॉ. भीमराव अंबेडकर के नाम से पहले बाबा साहब नाम की सम्माननीय उपाधि कैसे जुड़ी इसके पीछे भी एक रोचक कहानी है। 27 मई, 1935 को पत्नी रमाबाई अंबेडकर के निधन के उपरांत अंबेडकर जी गहरे सदमे में थे। वह अपनी पत्नी रामू (रमाबाई) से बहुत प्यार करते थे। अंतिम संस्कार के बाद डॉ. भीमराव ने अपने आप को

एक कमरे में बंद कर लिया। परिवारजनों, रिश्तेदारों, मित्रों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों के काफी आग्रह करने पर जब उन्होंने ने दरवाजा खोला तो यह देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गए कि भीमराव पर वैराग्य सवार हो गया है। उन्होंने भगवा वस्त्र धारण कर लिए हैं। मुंडन भी करा लिया है और वे अंतर्मुखी हो गए हैं। यह दृश्य देखकर उनके प्रशंसकों एवं अनुयायियों के मुख से अनायास ही “बाबा साहब” शब्द निकल पड़ा। इससे पूर्व लोग उन्हें भीमराव जी या डॉ. भीमराव अथवा डॉ. साहब कहकर संबोधित करते थे। तभी से उन्हें बाबा साहब कहा जाने लगा।

मैं जाग रहा हूँ क्योंकि मेरा समाज सो रहा है - एक बार गार्डियन समाचार पत्र, इंग्लैंड और न्यूयार्क टाइम्स, अमेरिका के प्रतिनिधि भारतीय नेताओं के साक्षात्कार लेने भारत आए। सबसे पहले वे गांधी जी से मिले। उन्होंने उन्हें रात्रि 9 : 00 बजे का समय दिया। उसके बाद वे मोहम्मद अली जिन्ना के पास गए। उन्होंने उन्हें रात्रि 9 : 30 का समय दिया। फिर वे बाबा साहब के पास आए। बाबा साहब ने उन्हें किसी भी समय साक्षात्कार लेने की अनुमति दी। जब अगले दिन यह प्रतिनिधि मंडल गांधी जी के घर पहुंचा तो उन्हें बताया गया कि गांधी जी सो रहे हैं। आप कल दिन में आ सकते हैं। फिर वे जिन्ना साहब के घर गए तो वह भी सोए हुए थे। जब वे बाबा साहब के पास मध्य रात्रि (लगभग 12 बजे) पहुंचे तो देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने देखा कि बाबा साहब अपने अध्ययन कक्ष में पूर्ण वेशभूषा (सूट-बूट-टाई में) अध्ययन करते हुए उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रतिनिधि मंडल ने पहला सवाल किया। बाबा साहब भारत के दो बड़े नेता गांधी जी और जिन्ना साहब हमें सोए हुए मिले और आप अभी तक हमारी प्रतीक्षा में जाग रहे हैं और अध्ययन भी कर रहे हैं? बाबा साहब ने उत्तर दिया गांधी जी और जिन्ना साहब आराम से सोते हैं क्योंकि उनका समाज जागृत है। वे जागरूक हैं। मैं जाग रहा हूँ क्योंकि मेरा समाज सोया हुआ है। अनभिज्ञ है। वह उनकी तरह जागरूक नहीं है। पत्रकार मंडल बाबा साहब का जवाब सुनकर अवाक रह गया।

मैंने अपने आप को बिकने नहीं दिया - जब मेरे बेटे गंगाधर का निधन हुआ तब उसके मृत शरीर को ढकने हेतु नए कपड़े लाने के लिए लोगों ने मुझसे पैसे

मांगे परंतु मेरे पास इतने पैसे भी नहीं थे कि मैं अपने बेटे के लिए कफन ला सकूँ। तब मेरी पत्नी रामू (रमाबाई) ने उसकी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़कर दिया और हम गंगाधर को शमशान ले जा सके। मैंने अपनी जिंदगी में गरीबी के जो दिन देखे वो भारत के किसी नेता ने नहीं देखे होंगे। फिर भी मैंने गरीबी के कारण कभी मेरा आत्म-सम्मान और मेरे आंदोलन को पीछे हटने नहीं दिया। ऐसी गरीबी में भी मैंने अपने आप को किसी के हाथों बिकने नहीं दिया।

राजरत्न की मृत्यु और गोलमेज सम्मेलन - भारत के आंतरिक विवादों को सुलझाने के लिए ब्रिटिश हुकूमत ने सन् 1930, 1931 एवं 1932 में तीन गोलमेज सम्मेलन लंदन में आयोजित किए। जिनकी अध्यक्षता ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम जे. मैकडोनाल्ड ने की थी। जब बाबा साहब दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए जाने की तैयारी कर रहे थे। तभी उनके बड़े भाई बालाराम आए और पूछा - “भीमा तु कहां जा रहा है ? अपना राजरत्न नहीं रहा। इतना सुनते ही बाबा साहब स्तंभ रह गए। थोड़ी देर में उन्होंने अपने आप को संभाला और कहा भैया! मुझे आज शाम को ही गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन जाना है। बालाराम ने कहा - “भीमा तु कैसी बात कर रहा है? घर में बेटे की मृत देह पड़ी है और तु लंदन जा रहा है। तब बाबा साहब ने कहा - अगर आज मैं लंदन नहीं गया तो गांधी जी और अन्य स्वर्ण हिंदू हम अछूतों के हक अधिकार को छीन लेंगे। मैं एक पुत्र को खोने का दर्द तो सह लूंगा लेकिन उन करोड़ों अछूत भाई-बहनों का क्या जो सदियों से जानवरों जैसा जीवन जीने को मजबूर हैं और बाबा साहब अपने दिल पर पत्थर रखकर लंदन को खाना हो गए।

वयस्क मताधिकार एवं आरक्षण में डॉ. अंबेडकर की भूमिका - 1928 में भारत आए साइमन कमीशन के समक्ष बाबा साहब ने अछूतों

के लिए संयुक्त चुनाव में जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण देने की मांग की तथा अछूतों की संख्या के अनुपात में ही शिक्षण, रोजगार व नौकरी में भी प्रतिनिधित्व की मांग की। इसके फलस्वरूप 1930 में साइमन कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर केंद्रीय सभा के संयुक्त चुनाव में सभी पदों पर अछूतों को भी आरक्षण मिला। उन्होंने पोस्ट ऑफिस, रेलवे, कस्टम एवं आयकर जैसे विभागों में भी अछूतों के लिए आरक्षित सीट की व्यवस्था करवाई। कैबिनेट मिशन के समक्ष अपने अछूतों के लिए अलग मताधिकार द्वारा अपने जनप्रतिनिधि चुनने की मांग रखी। 21 वर्ष या ऊपर के सभी भारतीयों के लिए चाहे वह महिला हो या पुरुष सभी के लिए वयस्क मताधिकार की जोरदार वकालत की।

आज युवा राजनीति में सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। अगर बाबा साहब ने वयस्क मताधिकार और अछूतों के लिए आरक्षण की पैरवी न की होती तो उन्हें पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिल पाना आसान नहीं था।

भीम गर्जना - 13 अक्टूबर, 1935 को महाराष्ट्र के येवला (नासिक) जिला में मुंबई क्षेत्रीय दलित वर्गीय परिषद की बैठक की अध्यक्षता करते हुए बाबा साहब ने धर्म परिवर्तन की घोषणा करते हुए कहा था - “हांलाकि मैं एक अछूत हिंदू के रूप में पैदा हुआ हूँ यह मेरी शक्ति से परे था परंतु आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं एक हिंदू के रूप में हरगिज नहीं मरूंगा।” कुछ लोग कहते हैं कि वे धर्म के विरोधी थे डॉ. अंबेडकर ने स्वयं कहा था कि “मैं धर्म में विश्वास रखता हूँ। धर्म के मूल्यों के बिना समाज का संघर्ष केवल ईर्ष्यालु तथा सत्ता प्राप्त करने वाले लोगों का एक क्षुद्र (झूठा) संघर्ष मात्र बन जाएगा।” धर्म पर उनका गहन अध्ययन एवं विश्वास था। वे कुछ व्यवस्थाओं को लेकर संघर्ष कर रहे थे। उनका संघर्ष कुछ मान्यताओं से था। उनका

“ जो कौम अपना इतिहास नहीं जानती, वह कौम अपने भविष्य का निर्माण भी नहीं कर सकती।

- डॉ. भीमराव अंबेडकर

संघर्ष उच्च जाति (सवर्णों और ब्राह्मणों) से नहीं था। इसलिए उनके संघर्ष में सभी जातियों और वर्गों के लोग शामिल थे। मगर वर्ष 1935 से 1956 तक 21 वर्ष के लम्बे अंतराल के बाद भी सवर्ण हिंदूओं का अछूतों के प्रति व्यवहार बदलता न देख अंततः उन्होंने 14 अक्टूबर एवं 15 अक्टूबर 1956 को अपने 10 लाख अनुयायियों के साथ नागपुर की दीक्षा भूमि पर बौद्ध भिक्षु महास्थाविर चंद्रमणि से बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।

श्रमिकों के मसीहा डॉ. अंबेडकर - 1942 से

1946 तक डॉ.अंबेडकर को वाइसरॉय की एक्जिक्यूटिव कौंसिल में श्रम आयुक्त (वर्तमान में लेबर मिनिस्टर) के रूप में शामिल किया गया था। डॉ. अंबेडकर श्रमिक कल्याणकारी कानून और भविष्य निधि (पीएफ) और रोजगार कार्यालय के जनक भी थे। श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा हेतु उन्होंने भविष्य निधि योजना लागू करवाने, श्रमिकों हेतु न्यूनतम मजदूरी, ओवर टाइम, परिसर में कैटीन एवं अस्पताल की व्यवस्था, विश्राम स्थल, नौकरी पेशा लोगों के लिए काम के घंटे 12 से घटाकर 8 घंटे तय कराने एवं निरंतर काम करने वाले मजदूरों को सवेतन अवकाश देना आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्रमिकों व कर्मचारियों के जीवन स्तर में सुधार लाने हेतु निरंतर वेतन वृद्धि, भत्तों, बोनस आदि सुविधाएं भी बाबा साहब के श्रम मंत्री कार्यकाल में ही स्वीकृत हुए। डॉ. अंबेडकर ने अपने कार्यकाल में लगभग 25 श्रम कानूनों का निर्माण किया और उनका क्रियान्वयन करवाया। इसके अलावा महिलाओं के लिए समान काम के लिए समान वेतन, मातृत्व अवकाश, शिशु देखभाल अवकाश (सीसीएल), महिला कल्याण कोष, महिला एवं बाल श्रम संरक्षण कानून आदि निर्धारित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आर.बी.आई. की स्थापना में बाबा साहब का योगदान - डॉ.भीमराव अंबेडकर एक जाने-माने

अर्थशास्त्री थे। जून 1916 में डॉ.अंबेडकर ने पी.एच.डी. के लिए एक थिसिस प्रस्तुत की थी जिसका शीर्षक था - “नेशनल डिविडेंट फॉर इंडिया ए हिस्टोरीक एंड एनालिटिकल स्टडी” अर्थशास्त्र में डी.एस.सी की डिग्री के लिए उन्होंने मार्च 1923 में अपनी थिसिस “द प्रॉबलेम ऑफ द रूपीज इट्स ऑरिजिन एंड इट्स सोल्यूशंस” प्रस्तुत की। इस थिसिस को दिसंबर 1923 में लंदन की पी.एस. किंग एंड कंपनी ने “द प्रॉबलेम ऑफ द रूपी” के नाम से प्रकाशित की। पुस्तक की प्रस्तावना मशहूर अर्थशास्त्री प्रोफेसर कैनन ने लिखकर डॉ. अंबेडकर की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस पुस्तक में डॉ. अंबेडकर ने मुद्रा समस्या का अत्यंत विद्वतापूर्ण विवेचन किया है। मुद्रा नीति पर लिखी गई यह पुस्तक अब तक लिखी गई सभी पुस्तकों में श्रेष्ठ है। पुस्तक की समीक्षा करते हुए ‘द टाइम्स’ (लंदन) ने लिखा - “यह पुस्तक अति श्रेष्ठ रचना है तथा इसमें अंग्रेजी की शैली सुगम है। अपने विषय में डॉ. अंबेडकर की पूरी पैठ है।” द इकॉनोमिस्ट (लंदन) ने लिखा कि यह सुस्पष्ट और सुयोग्यता पूर्ण लिखी गई पुस्तक है।

कुछ समय पश्चात् “ रॉयलकमीशन ऑन इंडियन करेंसी एंड फाइनेंस” जिसे ‘हिल्टन युवा आयोग’ के नाम से भी जाना जाता है। भारत दौरे पर आए। प्रत्येक सदस्य के पास “द प्रॉबलेम ऑफ द रूपी” पुस्तक सुलभ संदर्भ हेतु मौजूद थी। भारत की मुद्रा समस्या के विषय में डॉ.अंबेडकर ने ‘हिल्टन आयोग’ के समक्ष जो तथ्यात्मक विचार प्रस्तुत किए। वे उनकी मुद्रा समस्या के विषय में बहुत ही महत्वपूर्ण विचार थे। आयोग ने अपनी रिपोर्ट सन 1926 में प्रस्तुत की। इसी रिपोर्ट के आधार पर भारत में 01 अप्रैल 1935 को “रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया” (आर.बी.आई.) की स्थापना हुई।

एक सच्चे राष्ट्रभक्त डॉ.अंबेडकर - बहुत से लोग कहते हैं कि बाबा साहब ने देश की आजादी के लिए कहीं संघर्ष किया ? बाबा साहब कहते थे कि “ इस देश की आजादी आनी चाहिए, जितनी आप चाहते हैं, उतना मैं भी चाहता हूँ लेकिन मेरे मन में एक प्रश्न है कि देश की आजादी आएगी। तो मेरी और मेरे पिछड़े, शोषित, दलित समाज की भी आजादी आएगी या नहीं या वे ऐसे

ही गुलाम बने रहेंगे। क्या आजादी के बाद वे भी स्वतंत्र होंगे ? 26 अप्रैल 1942 को बंबई में कांग्रेस के नेताओं से बाबा साहब ने कहा था - “ मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आजादी के लिए तुम जैसे लड़ रहे हो, आपसे ज्यादा ताकत से मैं लड़ूंगा। लेकिन आप मुझे भरोसा तो दिलाओ कि स्वराज में मेरे समाज की क्या भागीदारी होगी ? वे कहते थे कि “तुम मेरे बंधुओं को स्वतंत्र कर दोगे ? अगर नहीं तो मैं क्या करूंगा स्वराज का? मैं देश की आजादी चाहता हूँ लेकिन साथ-साथ मेरे बंधुओं की भी आजादी चाहिए। वे कहते थे -“ दलित वर्ग की राजनीतिक स्वतंत्रता पर, सामाजिक स्वतंत्रता की त्वरित आवश्यकता है। जब तक आपको सामाजिक स्वतंत्रता नहीं मिलती। आपकी स्वतंत्रता का कोई मतलब नहीं है।

राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक, पश्चिम मध्य रेलवे,
जबलपुर

यदि आप सूरज की तरह
चमकना चाहते हैं तो पहले
सूरज की तरह तपना सीखे.

-अब्दुल कलाम

भारत रत्न का युवा स्वप्न

-कविता

चहुं ओर शांति है...

ना निवाला है, ना दिवाला है।
वो स्वयं ही, स्वयं का रखवाला है॥

विनाश का भाव था, या सृजन का अभाव था।
मंजिले तय थी, और पार करना मेरा स्वभाव था॥

अंततः मैं पहुंच ही गया, उस छोर पर।
वहां जाकर देखा, तो वहां भी अभाव था॥

अन्तर्मन और बाहरी परिवेश में, अथाह शांतिबोध था।
इस सब को देखकर, मैं अभी भी आवेश में था॥

ये भयावह मंजर की दस्तक का, आखिरी चरण था।
मैं सृजन का ही बीज था, जो अभी भी डटकर खड़ा था॥

विवेक कुमार दीक्षित
प्रयोगशाला सहायक-I
डी एम डब्ल्यू, पटियाला

रेल मंत्रालय, रेल भवन में रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

• एक रिपोर्ट

दिनांक 25.05.2021 को राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के संबंध में तत्कालीन माननीय रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल जी की अध्यक्षता में रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की 60 वीं बैठक का वर्चुअल रूप में आयोजन किया गया, जिसमें रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य, संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति की संयोजक एवं संसद सदस्य प्रो. श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी, माननीय सांसदगण श्री हरीश द्विवेदी, श्रीमती वीणा देवी, श्री नारायण लाल पंचारिया, श्री अखिलेश प्रसाद सिंह, श्री मनोज तिवारी, रेलवे हिंदी सलाहकार समिति में मनोनीत अन्य सदस्य गण, गृह मंत्रालय के सचिव डॉ. सुमीत जैरथ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा तथा केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद के मनोनीत सदस्यों ने भाग लिया।

इनके अलावा, इस बैठक में रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, बोर्ड कार्यालय के अन्य सदस्यगण आदि सहित विभिन्न क्षेत्रीय रेलों/उत्पादन कारखानों के मुख्य राजभाषा अधिकारियों तथा उपक्रमों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक आदि ने भाग लिया।

सर्वप्रथम, तत्कालीन माननीय रेल

मंत्री द्वारा बैठक में भाग लेने वाले सभी संसद सदस्यों और अन्य मनोनीत सदस्यों तथा अन्य हिंदी संस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा राजभाषा विभाग के सचिव का स्वागत किया गया और राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए उन्हें अपने सुझाव देने के लिए आमंत्रित किया गया।

इस बैठक में भाग लेने वाले सांसदों एवं अन्य मनोनीत सदस्यों ने रेल मंत्रालय के साथ-साथ विभिन्न रेल कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में किए जा रहे बेहतरीन एवं उत्कृष्ट कार्यों की प्रशंसा की। इसके साथ-साथ उन्होंने राजभाषा हिंदी का प्रयोग-प्रसार बढ़ाने के लिए कुछ सुझाव भी दिए।

इस अवसर पर रेल मंत्रालय के राजभाषा निदेशालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली रेल राजभाषा पत्रिका के 125 वें अंक का तत्कालीन माननीय रेल मंत्री द्वारा विमोचन भी किया गया और इस पत्रिका की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की गई।

इस वर्चुअल बैठक का सफल संचालन निदेशक, राजभाषा द्वारा किया गया। अंत में, कार्यपालक निदेशक, स्थापना (आर) द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई।

दिनांक 25.05.2021 को रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड में आयोजित रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के दृश्य



जब बाबा साहेब ने अनुवादक नियुक्त कराया

-लेख-

बाबा साहेब अंबेडकर जी के साथ 1931 से लेकर उनके परिनिर्वाण अर्थात् 6 दिसंबर 1956 तक साथ रहे और उनके मृत शरीर को मुंबई ले जाने में भी शामिल रहने वाले सोहन लाल शास्त्री उस समय विधि मंत्रालय में अनुवादक थे। वैसे तो शास्त्री जी ने बाबा साहेब के साथ 25 वर्ष रहने के अपने संस्मरण लिखे हैं, जिनसे बाबा साहेब के व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में उन तमाम बातों का पता चलता है, जिन्हें आम लोग नहीं जानते, परंतु शास्त्री जी की अनुवादक के रूप में नियुक्ति संबंधी संस्मरण बहुत ही रोचक और एक नई जानकारी देने वाला है कि आजादी से पहले अनुवादक थे और आजादी के बाद भी नियुक्त किए गए।

सोहनलाल शास्त्री का जन्म 1911 में पंजाब में हुआ था। वे बाबा साहेब डा. अंबेडकर के संपर्क में पच्चीस वर्ष रहे। वे मई 1935 में लाहौर से अपनी पढाई समाप्त करके, तहसील शंकरगढ़ (पाकिस्तान) के कंजरूद दत्ता कस्बे के एक डी.ए.वी. हाई स्कूल में हिंदी संस्कृत का हैड टीचर बन गए थे। जाति के आधार पर विरोध तो हुआ और अंबेडकर अनुयायी होने के नाते भी विरोध के स्वर उठते रहे, परंतु वे पूरे बारह वर्ष यानि 1947 तक वहाँ रहे और देश विभाजन के समय ही वहाँ से दिल्ली आना पड़ा। पूरे बारह वर्ष तक वे गुरुदासपुर, सियालकोट, जालंधर, होशियारपुर, लायलपुर और रियासत जम्मू में समय-समय पर होने वाले जलसों में बाबा साहेब के झंडे को बराबर ऊँचा किए रखने में कामयाब रहे और उनकी विचारधारा को लेकर स्थानीय उर्दू अखबारों में लेख आदि लिखते रहे। बाबा साहेब ने दिल्ली आकर अपने साथ काम करने का अवसर भी दिया परंतु वे स्कूल नहीं छोड़ पाए।

शास्त्री जी लिखते हैं- “ भारत के बंटवारे की चर्चा बड़े जोर से चल रही थी। तहसील शंकरगढ़ जो जिला गुरुदासपुर में थी और जिसमें मेरा डी. ए. वी. हाई स्कूल (कंजरूद दत्ता) भी था, वह रावी नदी के पार सियालकोट के साथ जुड़ी हुई थी। हिंदु-सिखों को पूरा

विश्वास था कि तहसील शंकरगढ़ भारत में ही रहेगी और पाकिस्तान को नहीं मिलेगी। रावी नदी भारत और पाकिस्तान के मध्य में आंतरिक रेखा बन गई थी। और, हमारी तहसील शंकरगढ़ भी पाकिस्तान में चली गई। ऐसी हालत में मुझे सपरिवार दिल्ली आना पड़ा क्योंकि मेरी पत्नी के माता पिता तथा भाई विमलचंद्र जी दिल्ली में ही रहते थे। जुलाई अगस्त 1947 में स्कूल से गरमी की दो महीने की छुट्टियाँ भी हो चुकी थीं। मैं कंजरूद से अपने बाल-बच्चों को साथ लेकर लाहौर पहुंचा और किसी न किसी तरह पहली अगस्त को दिल्ली आ पहुंचा और विमल चंद्र जी के घर डेरा डाल दिया। बाबा साहेब उन दिनों कांस्टीट्यूट असेम्बली के सदस्य चुने जा चुके थे और वैस्टर्न कोर्ट के एक कमरे में रहते थे। विमलचंद्र मुझे उनके पास ले गए। बाबा साहेब ने मुझसे पूछा कि तुम तब मेरे साथ वायदा करके क्यों नहीं आए, अब तो परिस्थितियाँ ही बदल चुकी हैं। अंतरिम सरकार 1946 में बन चुकी है, उसमें मेरे स्थान पर कांग्रेसियों ने बाबू जगजीवन राम को मंत्री बना लिया है। मैं तो अब संविधान सभा का एक सदस्य मात्र हूँ, वह भी कांग्रेसियों का कड़ा मुकाबला करके संविधान असेम्बली में दाखिल हुआ हूँ। मैं अब अपने लोगों की जो सेवा कर सकता हूँ, करूंगा, किंतु कांग्रेस तो मुझे पसंद नहीं करती। वह तो अबूतों का नेता या मेरा प्रतिस्पर्धी जगजीवन राम को बना चुकी है।”

फिर भी बाबा साहेब ने शास्त्री से पूछा कि तुम अब क्या करना चाहते हो ? उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान-पाकिस्तान में इस समय आपस में दंगे फसाद हो रहे हैं। हमारा स्कूल शंकरगढ़ तहसील में स्थित होने के कारण पाकिस्तान में जा चुका है। थोड़े दिनों बाद फसाद का उन्माद जरा ठंडा पड़ जाएगा तो मैं फिर अपने परिवार समेत वापस अपने स्कूल लौट जाऊंगा। मैं तो अपना सारा का सारा घरेलू सामान मजबूत ताले लगाकर अपने घर में बंद कर आया हूँ। कुछ भी तो साथ नहीं ला सका। दंगे फसाद शांत होने पर वापस जाने का पक्का इरादा है। अगर करोड़ों मुसलमान अभी तक भारत में रह गए हैं तो हम भी पाकिस्तान के नागरिक बन कर

रह सकते हैं। बाबा साहेब ने कहा कि देखिए क्या बनता है।

बाबा साहेब का काँग्रेस सरकार के मंत्रिमंडल में लिया जाना एक चमत्कार से कम नहीं था। बाबा साहेब के मंत्रिमंडल में शामिल होने के बाद उन्हें एक बंगले या कोठी में रहना जरूरी था। कालाकांकर के राजा की मिल्लियत हारडिंग एवेन्यू बंगला बाबा साहेब को एलाट कर दिया गया था। बाबा साहेब के पास अपनी निजी लायब्रेरी की पुस्तकों का भंडार था। कोठी के एक विशाल कमरे में पुस्तकें सजाई गई थी। बाबा साहेब भारत के संविधान का मसौदा बनाने में लगे रहते थे। एक दिन उन्होंने शास्त्री से पूछा - “कहिए शास्त्रीजी कब पाकिस्तान वापस लौटना है और अपने स्कूल को संभालना है क्योंकि तुम्हें अपने स्कूल से बेहद प्रेम है। एक बार 1944 में जब मैं वायसराय की कौंसिल का सदस्य था तो तुमने मेरे पास आ जाने का वायदा करके उसे तोड़ दिया था। अब पाकिस्तान में दोबारा जाइए।” उनका व्यंग्य सुनकर शास्त्री जी सकुचा गए क्योंकि वे एक बार उनसे झूठे पड़ चुके थे। सच्चाई तो यह थी कि वे जब पाकिस्तान से दिल्ली आए थे तो सब सामान कमरे में बंद करके और मकान में ताला लगाकर छोटे-छोटे बच्चों को रास्ते में पानी पिलाने के लिए केवल एक छोटे से ग्लास के सिवाए और कुछ भी साथ नहीं ला सके थे और वैसी गड़बड़ी में कुछ साथ ला भी तो नहीं सकते थे। उस समय तो परिवार के सदस्यों के जीवन को भी खतरा था। उन्होंने बाबा साहेब को उत्तर दिया, “मेरा वापस पाकिस्तान लौटना असंभव है।” तो उन्होंने पूछा कि बताओ अब क्या करना चाहते हो।” उन्होंने कहा, “मैं क्लर्की नहीं करना चाहता। मुझे तो जर्नलिज्म अर्थात् उर्दू-हिंदी में लेख लिखने का काम पसंद है अथवा मैं अंग्रेजी से उर्दू- हिंदी में अनुवाद (ट्रांसलेशन) का काम करने में रुचि रखता हूँ।”

बाबा साहेब उन्हें अपनी कार में बिठाकर एन.ब्लॉक, जो पार्लियामेंट के समीप (जहाँ अब रेल भवन है) ले गए। उस समय वहाँ ब्रॉडकास्टिंग मंत्रालय के अधीन इनफार्मेशन का दफ्तर था और उसके डायरेक्टर थे एक दक्षिण भारतीय आर्यंगर साहब।

बाबा साहब ने एन.ब्लॉक के सामने कार रोकी और अपने पी.ए. के द्वारा डायरेक्टर आर्यंगर साहब को बुलवाया। आर्यंगर साहब ने बाबा साहब को नमस्कार किया और बोले फरमाइए साहेब क्या हुक्म है। आर्यंगर साहब को बाबा साहब ने ही 1942-43 में नौकरी दी थी। शायद उस समय यह विभाग बाबा साहेब के ही अधीन था। बाबा साहब बोले, ब्लैकी (यह उनका उप नाम था), इस नवयुवक (शास्त्री) को अपने दफ्तर में नौकरी दे दो। यह उर्दू, हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी जानता है और मेरा स्नेहपात्र है। इसे अवश्य नौकरी दे दो। हाँ, यह परिवार वाला है, इसको ऐसा पद दिया जाए जिसमें बेसिक वेतन 300-350 रुपया मासिक से कम नहीं होना चाहिए। यह घटना सितंबर या अक्टूबर 1947 की है। आर्यंगर साहब ने दूसरे दिन शास्त्री जी को मिलने के लिए बुलाया। वे नियत समय पर उनके दफ्तर में पहुँच गए। उन्होंने अपने प्रशासनिक अधिकारी अर्क सेन को बुलाया और उनसे कहा कि हमारे दफ्तर से बहुत से मुसलमान मुलाजिम चले गए हैं। अभी उर्दू का अनुवाद तो चलता ही है, इन्हें (शास्त्री को) इन्फार्मेशन असिस्टेंट की एक जगह दे दी जाए। इस पद का बेसिक वेतन 300 रुपया मासिक था और भत्ता आदि मिलाकर लगभग 450 मासिक बनता था जबकि ट्रांसलेटर का बेसिक वेतन 160 रुपया मासिक था और भत्ता आदि मिलाकर लगभग 300 रुपए मासिक बनता था। अर्क सेन ने मुझे कहा कि दो पोस्टें खाली हैं किंतु होम मिनिस्ट्री में मिस्टर नाथियाल एक अफसर हैं, जब तक वे इजाजत नहीं देते, हम उन्हें भर नहीं सकते। तुम ऐसा करो कि होम मिनिस्ट्री से यह इजाजत हमें दिलवा दो कि दोनों पोस्टें भर ली जाएं। बाबा साहब को मैंने सब स्थिति बतला दी। बाबा साहब ने होम सैक्रेटरी श्री बैनर्जी के नाम एक डी.ओ.(पत्र) लिखकर मुझे दिया और कहा कि इसे स्वयं ले जाओ। बैनर्जी मेरे विशेष कृपापात्र रहे हैं, वह तुम्हारे लिए सब कुछ करेंगे।

उन्होंने लैटर ले जाकर बैनर्जी साहब को दिया। उन्होंने पत्र को देखा और नाथियाल साहब को बुलाकर कहा कि इन्फार्मेशन डायरेक्टोरेट को दोनों पोस्टें भरने के लिए फौरन इजाजत दे दो और उन्होंने टेलीफोन पर ही इजाजत दे दी। उन पोस्टों में एक पद था इन्फार्मेशन असिस्टेंट का और दूसरा था ट्रांसलेटर का। तीसरे दिन शास्त्रीजी जब अर्क सेन से मिले तो उन्होंने कहा कि

हमें पोस्टें भरने की इजाजत मिल गई है। तुम्हें ट्रांसलेटर की पोस्ट मिल जाएगी। मैंने पूछा कि उसका बेसिक वेतन कितना होगा, वे बोले तुम तीन सौ रुपए चाहते थे सो तुम्हें कुल मिलाकर 300 रुपए मिल जाएंगे। शास्त्री ने कहा कि श्रीमानजी मुझे तो बेसिक 300 रुपया वाली पोस्ट चाहिए। मैं इन आसामियों को भरने की इजाजत लाया हूँ और आयंगर महोदय को बाबा साहेब भी मुझे बेसिक 300-350 रुपया मासिक वेतन वाला पद देने के लिए कह गए हैं। अर्क सेन जरा तू-तड़ाक करने लगे कि यदि तुम ने यह पोस्ट (ट्रांसलेटर) ही लेनी है तो ले लो वरना हम यह भी किसी और को दे देंगे। यह सुनकर शास्त्री जी सीधे बाबा साहेब के बंगले पर पहुंचे और अर्क सेन साहेब का सारा किस्सा उन्हें सुना दिया। बाबा साहेब ने अपने प्राइवेट सैक्रेटरी मार्टन मैसी को बुलाकर कहा कि अर्क सेन या आयंगर को बोलो कि शास्त्री को बड़ी पोस्ट दी जाए। मैसी और अर्क सेन दोनों गहरे दोस्त थे। मैसी ने शास्त्री को उपदेश देना शुरू कर दिया कि 160 रुपया वाली पोस्ट ले लो। अफसरों से झगड़ना ठीक नहीं होता। थोड़े दिनों में तुम्हारी तरक्की हो जाएगी। शास्त्री जी को पता चला कि उन दिनों जो शरणार्थी आए थे, ऐसे अफसर उनसे पाँच सौ, हजार रुपया रिश्वत लेकर पोस्टें दिया करते थे। जिसमें नाथियाल साहेब का भी हिस्सा होता था क्योंकि उन दिनों एम्प्लायमेंट एक्सचेंज का दफ्तर तो था नहीं, होम मिनिस्ट्री के हाथ में सब कुछ था। उनको दी जाने वाली पोस्ट का भी किसी व्यक्ति से एक हजार रिश्वत लेकर देने का सौदा तय हो चुका था। हालांकि बाबा साहेब मैसी को यह कहते थे कि शास्त्री को उनसे बड़ी पोस्ट देने के लिए कहो, क्योंकि यह पोस्ट उन्होंने बैनर्जी को कहकर भरने की इजाजत लेकर दी है। आखिरकार मैसी साहेब मजबूर हो गए और शास्त्री जी को मनचाही पोस्ट देने के लिए अर्क सेन ने उन्हें बुलाया। उन्हें नियुक्ति पत्र दिया गया जिसमें पोस्ट और वेतन-स्केल तो मनचाहा था किंतु साथ ही लिखा था कि यह पोस्ट बिल्कुल अस्थायी है जो छह महीने तक ही चलेगी। मैंने ऐसी नियुक्ति को जो केवल छह महीने तक चलने वाली थी, लेना पसंद नहीं किया और इस नियुक्ति-पत्र को देखकर वापस लौटा दिया।

शास्त्री जी अपने संस्मरणों में लिखते हैं, “मैंने बाबा साहेब को बता दिया था कि मुझे इन्फार्मेशन विभाग की अस्थायी नौकरी स्वीकार नहीं है। मैं नहीं चाहता कि छह महीने के बाद फिर आपको कष्ट दूँ कि मुझे कहीं

और स्थान दिलाया जाए। मैं स्थायी नौकरी चाहता हूँ।” बाबा साहेब ने कहा कि कहीं ऐसी पक्की नौकरी ढुंढो। मैं उसे दिलवाने के पूरा पूरा प्रयत्न करूंगा।” विमलचंद्र के अधीन एक असिस्टेंट श्री दामोदर जोशी नाम के व्यक्ति काम करते थे। उन्होंने बतलाया कि लॉ मिनिस्ट्री में दो मुसलमान ट्रांसलेटर हुआ करते थे। एक सीनियर और दूसरा जूनियर ट्रांसलेटर। सीनियर ट्रांसलेटर का वेतनमान 250-450 बेसिक था और जूनियर का बेसिक वेतनमान 110-300 था। यह दोनों व्यक्ति अंग्रेजी में पास हुए कानूनों का अनुवाद उर्दू भाषा में किया करते थे। यह दोनों पाकिस्तान चले गए हैं, इसलिए यह दोनों स्थान खाली पड़े हैं। यह दोनों पद सीधे बाबा साहेब के मंत्रालय में ही थे। बाबा साहेब ने श्री के. वी. के. सुंदरम् को जो उस समय लॉ मिनिस्ट्री के सैक्रेटरी थे, कहा कि आज तक कानूनों का अनुवाद केवल उर्दू में ही होता रहा है। अब भारत स्वतंत्र हो चुका है। जब तक संविधान पास नहीं हो जाता और राजभाषा कौन सी होगी, यह तय होने तक अंग्रेजी कानूनों, नियमों, आर्डिनैंसों तथा बिलों का अनुवाद हिंदुस्तानी भाषा में होगा जो फारसी तथा हिंदी (देवनागरी) लिपि में किया जाएगा। दोनों भाषाओं और लिपियों में निपुण या कुशल व्यक्ति मेरे पास मौजूद है। अतः लॉ मिनिस्ट्री में सीनियर या चीफ ट्रांसलेटर की पोस्ट मुझे (सोहन लाल शास्त्री) को दी जाए। सुंदरम् साहेब यद्यपि दक्षिण भारतीय आई.सी.एस. ऑफिसर थे किंतु संस्कृत के पंडित और हिंदी के जानकार थे। उन्होंने मुझे टेस्ट देने के लिए अपने कमरे में बुलाया और पुनर्वास मंत्रालय संबंधी एक छोटा सा ऐक्ट ट्रांसलेशन के लिए दिया। मैंने अंग्रेजी-हिंदी कोष की सहायता के दोनों भाषाओं में अनुवाद कर दिया। सैक्रेटरी महोदय ने अनुवाद की सरसरी तौर पर जांच पड़ताल की और मुझे इस शर्त के अधीन 01 दिसंबर 1947 से बतौर चीफ ट्रांसलेटर भर्ती कर लिया कि मुझे पंद्रह दिनों के अंदर-अंदर शिमला चले जाना होगा क्योंकि लॉ मंत्रालय के पब्लिकेशन विभाग का दफ्तर वहाँ ही था। अनुवादक उसी विभाग के साथ संबद्ध थे। मैंने बाबा साहेब को

सब कहानी कह सुनाई कि मुझे नौकरी तो आपने दिलवा दी किंतु मैं अपने छोटे-छोटे बाल बच्चों को लेकर इतनी कड़ाके की सर्दी में शिमला नहीं जा सकूंगा। हम लोग बड़ी कठिनाई से जान बचाकर पाकिस्तान से सपरिवार दिल्ली आए हैं। अब निमोनिया से पीड़ित होकर शिमला जा कर मरना नहीं चाहते। हमारे पास गर्म कपड़े भी तो नहीं हैं। हम शिमला की सर्दी का मुकाबला नहीं कर सकते। अतः इस शर्त पर यह नौकरी मुझे ठीक नहीं बैठती। बाबा साहेब बोले “फौरन नियुक्ति पत्र ले लो। तत्पश्चात् मैं देख लूंगा। मैं मंत्री हूँ अतः यह विभाग मेरे अधीन है। यदि तुम शिमला नहीं जाना चाहते तो मत जाना। किंतु पहली दिसंबर 1947 से चार्ज जरूर ले लो।”

और शास्त्री जी की विधि मंत्रालय में मुख्य अनुवादक के पद पर 01 दिसंबर 1947 को नियुक्ति हो गई। यह पद क्लास-II नॉन-गजटेड था, जिसका वेतनमान 250-15-450 रु.था। जूनियर ट्रांसलेटर के पद पर किसी की नियुक्ति नहीं हुई। इसलिए उन पर कार्यभार अधिक रहा। उन्होंने अपने पैसे से अंग्रेजी-हिंदी कोष खरीदा और काम में लग गए। वे लिखते हैं – “मेरी योग्यता हिंदी, उर्दू में तो काफी थी किंतु अंग्रेजी में मैं केवल एफ.ए. था। और लीगल इंग्लिश या कानूनों का अक्षरशः अनुवाद करना बहुत टेढ़ी खीर थी, किंतु मैं सदैव आशावान रहा हूँ।....अंग्रेजी का अभ्यास कम और कानून की भाषा से अनभिज्ञ होने पर भी मैंने कमर कस ली कि मैं इस काम को करके ही छोड़ूंगा क्योंकि मैं बाबा साहेब के चुनाव पर बट्टा नहीं लगवाना चाहता था। मैंने कानूनी भाषा की परिभाषाएं सीखने में बहुत परिश्रम किया। पहले दिन बारह घंटे पैसिल से अनुवाद करना और दूसरे दिन स्याही से साफ और शुद्ध करके लिखना आरंभ किया।...” लेकिन उनके ऊपर शिमला जाने की तलवार लटकी रही। न जाने पर नौकरी से हाथ देने की धमकी अलग। जबकि उनके बच्चे टाइफाइड से पीड़ित थे और वे पहाड़गंज की गंदी बस्ती में रहते थे। उनके दोस्तों तथा रिश्तेदारों सबने मुँह मोड़ लिया था। उन्हें केवल सच्चे मानवतावादी भगवान बुद्ध की तरह महाकारुणिक महापुरुष बाबा साहेब डाक्टर

अंबेडकर जी का ही भरोसा था और अपनी करुण कहानी बाबा साहेब को सुनाई तो उन्होंने तुरंत रहने के लिए अपने आउट हाउस के दो कमरे दे दिए और सैक्रेटरी सुंदरम् जी को एक नोट भेजा कि पार्लियामेंट में बिलों, नियमों तथा कानूनों के अनुवाद की जरूरत हर समय रहती है और शिमला में बैठा ट्रांसलेटर ऐसी फौरी आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता इसलिए शास्त्री को दिल्ली में ही रहने दिया जाए। परंतु शास्त्री जी को मंत्रालय के अफसर डराने लगे कि मिनिस्टर तो आते जाते हैं असली अधिकार तो सैक्रेटरी और अन्य अफसरों के हाथ में ही रहते हैं। वैसे भी सुंदरम् साहेब भारतीय अंग्रेज हैं, किसी आई.सी.एस. की हुक्मउदूली बहुत महंगी पड़ेगी। और यह भी कि यह नियुक्ति तो अस्थायी है, फ़ैडरल पब्लिक सर्विस कमीशन में इंटरव्यू भी तो पास करना पड़ेगा।

फ़ैडरल पब्लिक सर्विस कमीशन ने समाचार-पत्रों में ट्रांसलेटर पद की वेकेंसी की घोषणा कर दी, जिसकी योग्यता थी, हिंदी-उर्दू का पूरा ज्ञान, संस्कृत का ज्ञान, कानून बिल आर्डिनेंस तथा नियमों के उर्दू, हिंदी या हिंदुस्तानी में अनुवाद करने का पूरा-पूरा अनुभव और अंग्रेजी में कम से कम एफ.ए. होना अनिवार्य है। आयु अधिक से अधिक 40 वर्ष। बेकारी का जमाना था सो हजारों उच्च डिग्री प्राप्त हिंदू सिख संपादक तथा वकील आदि ने कमीशन में प्रार्थना-पत्र भेज दिए। शास्त्रीजी की शिक्षा अनुभव तो पूरा था परंतु डर था मंत्रालय के प्रतिनिधि अधिकारी का जो इंटरव्यू कमेटी का एक सदस्य होता था और वह थे विधि मंत्रालय के डिप्टी सैक्रेटरी ठाकुर गोपाल सिंह जो किसी और को चाहते थे। फ़ैडरल पब्लिक सर्विस कमीशन के चैयरमैन थे श्री कृपलानी आई.सी.एस. और स्वयं इंटरव्यू में बैठे थे। इस इंटरव्यू के अपने अनुभव बताते हुए शास्त्रीजी लिखते हैं – “मुझे पब्लिक सर्विस कमीशन के अध्यक्ष श्री कृपलानी ने पूछा, कहिये मिस्टर शास्त्री, तुमने कानूनों आदि का हिंदुस्तानी भाषा की दोनों लिपियों में अनुवाद किया है। मैंने पागलपन एक्ट, दिल्ली रेंट कंट्रोल एक्ट की प्रकाशित पुस्तकें और पुनर्वास मंत्रालय के नियम तथा कुछ बिलों का छपा हुआ अपना अनुवाद उनके सामने रख दिया। कृपलानी

साहब ने मुझसे पूछा कि तुमने सबसे पहले पागलपन (ल्यूनिसी) एक्ट का अनुवाद ही क्यों किया। मैंने कहा मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि भारत पाकिस्तान का बंटवारा होने पर बहुत से लोग पागल हो गए हैं शायद मंत्रालय ने इसलिए इस कानून का अनुवाद पहले करने के मुझे आदेश किए।

कृपलानी जी ने दूसरा प्रश्न यह पूछा कि तुम पंजाबी हो, तुम्हारा नौकरी का पहला दावा पूर्वी पंजाब सरकार पर होना चाहिए तो मैंने उत्तर दिया कि अछूतों के लिए भारत सरकार में भी कुछ अनुपात नियत है ही, इसलिए मैं अपने अधिकार की प्राप्ति के लिए भारत सरकार में भी तो प्रवेश पा सकता हूँ। कृपलानी साहब बोले - जरूर। फिर उन्होंने गोपाल सिंह जी से पूछने के लिए कहा तो उन्होंने कुछ नहीं पूछा।

इस तरह सोहन लाल शास्त्री का चयन 1947 में विधि मंत्रालय में चीफ ट्रांसलेटर के रूप में हुआ। और वे बाबा साहेब के प्रति कृतज्ञ तो थे ही, फिर भी लिखते हैं कि यह सत्य है कि बाबा साहेब ने जिस व्यक्ति का हाथ पकड़ा, उसे पार लगा कर ही छोड़ा।"

सत्येंद्र सिंह

पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी मध्य रेल
"रामेश्वरी सदन" सप्तगिरि सोसायटी,
51/44, जांभुलवाडी रोड, आंबेगांव खुर्द,
पुणे - 411046 महाराष्ट्र

"हमारी माटी का लाल: डॉ० भीमराव अंबेडकर"

-कविता -

हमारी माटी का लाल
जन्म से जो ना बड़ा हुआ।
कर्म इतना बड़ा हुआ इनका
भारत रत्न का मिला सम्मान ॥

बाबासाहेब जिन्हें हम पुकारें
सामाजिक चेतना फैलाने को वह खड़ा हुआ।
बुद्ध की शिक्षा को फैलाने वाला
छुआ-छूत मिटाने चला ॥

अपने धर्म की ही नहीं
सब धर्मों की बातें थी इन्होंने सीखीं।
एक-दो ही नहीं 9 भाषाओं की
उन्होंने शिक्षा ली थी ॥

तिरंगे की शोभा में चक्र
बाबा साहेब की ही देन है।
भारत मां के ऐसे सुपुत्र फिर जन्म लें
मन से ऐसी कामना के साथ ईश्वर को सुमिरन है॥

कविता सिंह

पत्नी, श्री रवि शंकर सिंह
एसएएलपी
आमला, नागपुर डिवीजन

जो समय बीत गया उसे याद कर
पछताना बेकार है अगर कोई गलती हुई भी है
तो उससे सबक लेकर वर्तमान को श्रेष्ठ बनाने
का प्रयास करना चाहिए।

-आचार्य चाणक्य

डॉ० भीम राव अंबेडकर

-लेख

भारतीय संविधान के शिल्पी, विद्वान, महामानव, न्याय विद् मनीषी, समाज सुधारक, कुशल राजनीतिज्ञ डॉ० भीम राव अंबेडकर जी का जन्म 14 अप्रैल सन् 1891 को मध्य प्रदेश के छोटे से महू गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम भीमा बाई मुरबादकर एवं पिता श्री रामजी मालोजी सकपाल थे जो कि मध्य प्रांत (मध्य प्रदेश) की महू छावनी में ब्रिटिश भारतीय सेना में सूवेदार थे। अपनी जाति के बच्चों के विपरीत युवा भीम ने स्कूल में पढ़ाई की थी हालांकि उन्हें तथा उनके दलित मित्रों को कक्षा के अंदर बैठकर पढ़ने की अनुमति नहीं थी। अध्यापक उनकी किताब (पुस्तक) तथा कापियों को हाथ से भी नहीं छूते थे। जब उन्हें प्यास लगती थी तो बहुत उचाई से पानी डाला जाता था। जिस दिन चपरासी स्कूल में नहीं होता था तो कभी-कभी प्यासा ही रहना पड़ता था। पढ़ने और सीखने की ललक होने के कारण उनका ध्यान इन बातों पर न होकर केवल पढ़ाई एवं चिंतन में ही लगे रहते थे। ऐसी विषम परिस्थिति में भी सीखने और पढ़ाई की गहरी रुचि होने के कारण डॉ० भीम राव अंबेडकर जी बॉम्बे के प्रतिष्ठित एल्फिस्टन हाई स्कूल में दाखिला लेने वाले पहले दलित बन गए थे। बाद में उन्होंने तीन साल के लिए वड़ौदा राज्य छात्रवृत्ति जीती और न्यूयार्क में कोलम्बिया विश्व विद्यालय से स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी की। उन्होंने जून 1915 में एम.ए. की परीक्षा पास की तथा अपना शोध कार्य निरंतर जारी रखा।

भारतीय समाज, अर्थशास्त्र और इतिहास के साथ कार्य करने वाले इन तीन महत्वपूर्ण शोधों को अच्छी तरह पूर्ण करने के पश्चात् डॉ० भीम राव अंबेडकर ने लंदन स्कूल आफ इकोनोमिक्स में दाखिला

लेकर उन्होंने डॉक्टरेट थीसिस पर कार्य प्रारम्भ कर दिया था। वह अगले चार साल तक लंदन में रहे तथा दो डॉक्टरेट की पढ़ाई पूरी की और उन्हें मानव डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया था। डॉ० भीम राव अंबेडकर प्रतिभाशाली लेखक, सफल पत्रकार एवं जुझारू संपादक थे, वे पढ़ने तथा लिखने में बहुत रुचि रखते थे। इसी कारण उन्होंने मुम्बई के घर राजगृह में एक समृद्ध ग्रंथालय बनाया था, जिसमें 50 हजार से अधिक पुस्तकें थी। अपनी लेखनी द्वारा उन्होंने दलितों व देश की समस्याओं पर प्रकाश डाला था उनके द्वारा महत्वपूर्ण ग्रन्थों में “अनहिलेशन ऑफ काष्ट , द बुद्ध एण्ड हिज हिन्दुज” आदि शामिल हैं। अपने समकालीन राजनेताओं की तुलना में उन्होंने सबसे अधिक लेखन किया था। 32 पुस्तकें और शोध प्रबंध (22 पुस्तकें पूर्ण, 10 पुस्तकें अपूर्ण) 10 ज्ञापन साक्ष्य और वक्तव्य 10 अनुसंधान आदि ये सभी अंग्रेजी भाषा में ही लिखी हैं इसके अलावा वे भारतीय संविधान के रचियता भी थे।

डॉ० भीम राव अंबेडकर साहब को 11 भाषाओं का पूर्ण ज्ञान था जिसमें अंग्रेजी, हिन्दी, पालि, संस्कृत, गुजराती, जर्मन, फारसी, फ्रेंच, कन्नड और बंगाली भाषाएं शामिल थी।

डॉ० भीम राव अंबेडकर जी 1924 में भारत वापिस आए, वापिस आने के बाद उन्होंने अस्पृश्यता(छूआ-छूत) के खिलाफ एक सक्रिय आन्दोलन करने का निर्णय लिया। 1924 में ही उन्होंने भारत से जाति व्यवस्था को उखाड़ने के उद्देश्य से “बहिश्चक हितकारिणी सभा” की स्थापना की थी। संगठन ने सभी आयु वर्ग के लिए मुफ्त विद्यालय एवं पुस्तकालय खोले ताकि हर वर्ग उनसे लाभ उठा सके। बाबा साहब ने दलितों की शिकायतों को अदालत पहुंचाया तथा उन्हें न्याय दिलाया।

अंबेडकर साहब का राजनैतिक जीवन 1926 से प्रारम्भ हुआ था। बाबा साहेब के नाम से दुनिया भर में लोक प्रिय डॉ. भीम राव अंबेडकर जी समाज-सुधारक, दलित राजनेता, महामनीषी, क्रांतिकारी योद्धा, लोक नायक, विद्वान, दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाज सेवी एवं धैर्यवान व्यक्तित्व होने के साथ ही विश्व स्तर के विधिवेत्ता व भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार थे, उनके स्मरण में शक्ति की प्रखरता थी वे अनन्य कोटि के नेता थे। जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समग्र भारत की कल्याण कामना, संतुलित समाज रचना में उत्सर्ग कर दिया। खासकर 90 प्रतिशत दलित सामाजिक व आर्थिक तौर से अभिशप्त थे, उन्हें अभिशाप से मुक्ति दिलाना इनका जीवन संकल्प था। वे भारतीय राजनीति के एक धुरी की तरह थे जो कि आज दुनियां भर में उनका नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। दलित मसीहा होने के साथ-साथ हर वर्ग की भलाई के लिए हर वक्त चिंतन करते रहते थे। अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए आरंभिक जीवन में वे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहें तत्पश्चात् वकालत भी की। इसके बाद उनके भीतर अंगडॉई ले रहे राष्ट्रीय व्यक्तित्व ने उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय कर दिया और तब अंबेडकर साहब भारत की स्वतंत्रता के प्रचार एवं चर्चाओं में सक्रिय हो गए। उन्होंने पत्र पत्रिकाओं को न केवल प्रकाशित किया वरन् उनमें क्रांतिकारी लेखनी से समाज को भी झकझोर दिया था। राजनीतिक अधिकार और दलितों का सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत तथा भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई थी।

डॉ. भीम राव अंबेडकर ने धार्मिक विचारों के व्यक्तित्व थे सन् 1956 में उन्होंने आहत होकर बौद्ध धर्म को अपना लिया था। डॉ. भीम राव अंबेडकर जी की बढ़ती लोकप्रियता तथा जन समर्थन होने के कारण उनको 1931 में लंदन में आयोजित दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। 1936 में उन्होंने स्वतंत्र लेबर पार्टी की स्थापना की थी जो कि सन् 1937 में केन्द्रीय विधान सभा के चुनावों में 15 सीटें जीतने में सफल हुए। 1937 में ही उन्होंने एक

पुस्तक जाति के विनाश नामक प्रकाशित की जो कि न्यूयार्क में उनके द्वारा लिखे गए शोध पत्र पर आधारित थी। इसके अलावा गांधी जी द्वारा रचित शब्द हरिजन पुकारने के कांग्रेस पार्टी के फैसले का भी कड़ी निन्दा की थी। सन्ने अर्थों में बाबा साहब एक क्रांतिकारी युग-पुरुष थे। जिनके जीवन का सार है कि क्रांति लोगों के लिए होती है न कि लोग क्रांति के लिए होते हैं। 15 अगस्त, 1947 को जन भारत स्वतंत्र हुआ तो कांग्रेस सरकार बनी थी, उसमें डॉ. भीम राव अम्बेडकर को देश का पहला कानून मंत्री बनाया गया। 29 अगस्त 1947 को बाबा साहब को संविधान मसौदा तैयार करने के कार्य में भी सभी की प्रशंसा प्राप्त थी। इसके बाद 26 नवंबर 1949 को बाबा साहब द्वारा निर्मित इस संविधान को अंगीकार कर लिया गया।

कुछ समय बाद अर्थात् 1951 में संसद में इनके हिन्दू कोड बिल के रोकने के कारण बाबा साहब ने केन्द्रीय मंत्रीमंडल से त्यागपत्र दिया था। इस हिन्दू कोड बिल के मसौदे में उत्तराधिकार विवाह और अर्थव्यस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गई थी। डॉ. भीम राव अंबेडकर वास्तव में समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे और कश्मीर के मामले में धारा 370 का विरोध करते थे। 1990 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था। डॉ. भीम राव अंबेडकर मधुमेह बीमारी से पीड़ित थे। 6 दिसंबर, 1956 को दिल्ली में नींद के दौरान घर पर ही मृत्यु हो गई थी।

अतः अंत में कहा जा सकता है कि डॉ. भीम राव अंबेडकर एक कुशल राजनीतिक, समाज सुधारक, महान अर्थशास्त्री, क्रांतिकारी योद्धा, विद्वान, दार्शनिक, लोक नायक, धैर्यवान, प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और तो और आज भारतीय संविधान भी डॉ. भीम राव अंबेडकर जी की ही देन है।

नरेन्द्र सिंह गहलौत
मंडल वाणिज्य निरीक्षक(जन०परि०)
आगरा

बाबा साहेब आपको समर्पित

कविता

बाबा साहेब अंबेडकर जी आपको शत-शत नमन करती हूँ,
स्नेह से सींचे श्रद्धा सुमन आपको अर्पित करती हूँ.

रामजी सकपाल और भीमाबाई के लाल
समाज का उद्धार कर तुमने कर दिया कमाल,

बाबा तुम्हारे कार्यों का नित-नित स्मरण करती हूँ,
समाज में किए क्रांतिकारी कार्यों का दिल से वर्णन करती हूँ.

काम के घंटे बाबा ने अगर 14 से कम करके 8 न किए होते,
तो सोचो हम सुबह 8 से रात 11 बजे तक दफ्तर में ही होते.

हमारे जीवन का तब क्या हाल हुआ होता,
यकीनन जीवन एक बोझ बन गया होता.

बाबा ने हमारे जीवन को दिया सुधार
इसके लिए बाबा आपका बहुत बहुत आभार

मजदूर सुदृढ़ समाज की मजबूत नींव होता है
क्यों शोषण करते हो उसका, वह मील का पत्थर होता है

श्रमिकों के लिए भी हों मेडिकल और बीमा नियम
इसके लिए बाबा ने बना डाले ईएसआई और बीमा अधिनियम

मजदूरी की दरों, ऋण, और आवास का किया निर्धारण
रोजगार के वास्ते राष्ट्रीय रोजगार एजेंसीओं और रोजगार
कार्यालयों का किया स्थापन,

श्रमिकों के लिए महंगाई भत्ते और वेतनमान में संशोधन का
किया शुभ आरंभ
भारत के एक नए समाज का किया लोकार्पण

नहीं भूल पाएंगे हम आपका यह उपकार
संविधान को रच कर लिख दिया एक नया इतिहास

नहीं भूलेंगे बाबा तुम्हारा हम पर यह उपकार
समानता का अधिकार देकर कर दी हम सबकी नैया पार

नारी शक्ति का है समंदर, यह है जननी सारे जग का आधार
पैरों की धूल मानता था समाज जिसे, अंबेडकर ने उसे पहना दिया
सिर का ताज

कहां नारी परिवार की धुरी है,
इसलिए उसके लिए शिक्षा जरूरी है

सशक्त नारी ही कर सकती है सशक्त भारत का निर्माण
इसके लिए संविधान में व्यापक प्रावधान

महिला श्रमिक कल्याण एवं बाल निधि का किया गठन
बनाया प्रसूति अवकाश और महिला एवं बाल श्रमिक सुरक्षा
अधिनियम

ना सहे नारी पति का शासन
इसलिए हिंदू कोड बिल का किया प्रतिपादन

दे सकेंगी क्रूर पति को तलाक
पिता की पैतृक संपत्ति में मिले उसे भी पुत्र समान अधिकार

मुक्त किया भारत को गुलामी की जंजीरों से,
दलित वर्ग को दी आशा इंसानियत की लिख डाली एक नई
परिभाषा

भारत रत्न अंबेडकर तुम को कोटि-कोटि धन्यवाद
एक नया समाज रचकर तुम ने कर दिया हिंद का उद्धार

दुनिया में फिर ऐसा कोई दीदावर पैदा ना हुआ
साक्षी है इतिहास फिर कोई अंबेडकर ना हुआ

खिलता नहीं फूल ऐसा चमन में बार-बार
तुम्हें कोटि-कोटि नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार
जय भीम जय भारत

पुष्पिंदर कौर

सेवानिवृत्त उप निदेशक, राजभाषा रेलवे बोर्ड

17 जून 2021 को रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड में आयोजित मशीन आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर "कंठस्थ सॉफ्टवेयर" के प्रशिक्षण के दृश्य

17 जून को रेल भवन में राजभाषा निदेशालय ने मशीन आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर "कंठस्थ" का प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। इस प्रशिक्षण सत्र में रेलवे बोर्ड राजभाषा निदेशालय से वरिष्ठ तथा कनिष्ठ अनुवाद अधिकारियों को नामित किया गया है। इस प्रशिक्षण सत्र में कार्यपालक निदेशक, स्थापना (आर.) श्री मनोज कुमार राम, निदेशक राजभाषा, श्री विपिन पवार, संयुक्त निदेशक, राजभाषा श्रीमती नीरू पटनी सहित अनेक अधिकारियों / कर्मचारियों की उपस्थिति रही।



गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के विशेषज्ञ श्री राजेश श्रीवास्तव, उपनिदेशक (राजभाषा एवं तकनीकी) ने सत्र में विशेषज्ञ के रूप में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया।

30 जून, 2021 को आयोजित रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 139 वीं बैठक के दृश्य

30 जून, 2021 को रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 139 वीं बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सुनीत शर्मा ने की।



इस बैठक में रेलवे बोर्ड के समस्त सदस्य, समस्त महानिदेशक एवं रेल मंत्रालय के विभिन्न उपक्रमों के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी सम्मिलित हुए।

बैठक में मार्च, 2021 को समाप्त तिमाही की राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई एवं महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक का संचालन विपिन पवार निदेशक, राजभाषा ने किया।



भारतीय रेल के सितारे जिन्होंने अन्य क्षेत्रों में भी अपनी चमक से देशवासियों को आलोकित किया

-लेख-

भारतीय रेल के 13 लाख से अधिक कर्मचारी सीमा पर तैनात सैनिकों के सदृश्य सारे भारत को चौबीसों घंटे, 365 दिन एक सूत्र में बांधने के लिये निष्णात भाव से कार्यरत हैं। यद्यपि यह कार्य अत्यंत समय एवं परिश्रम की दरकार करता है इसके बावजूद, अनेक रेलकर्मियों एवं अधिकारियों ने रेल सेवा से इतर क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर देशवासियों को प्रभावित किया है। ये कार्य इनके द्वारा आध्यात्म, कला, साहित्य, सिने-जगत, राजनीति, समाजसेवा, देशसेवा तथा लोकसेवा के क्षेत्रों में किये गए हैं। मैं खेल-जगत को इससे दूर रखना चाहूंगा, क्योंकि, खेल-जगत में तो पूरी सितारों की आकाश गंगा ही रेलवे से उतर आयेगी। आइये, ऐसी हस्तियों के बारे में जानते हैं:-

• नोबल पुरस्कार

भारतीय रेलवे यांत्रिक इंजीनियरिंग सेवा के अधिकारी रहे राजेन्द्र कुमार पचौरी ने सहायक कारखाना प्रबंधक के रूप में डीजल लोको मोटिव वर्कशॉप, वाराणसी से अपना करियर प्रारम्भ किया। आप 1958 के "स्पेशल क्लास रेलवे अप्रेंटिस" हैं। बाद में आपने डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की तथा अनेक अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में अध्यापन कार्य किया। 1982 में आपको 'द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट' टेरी का निदेशक नियुक्त किया गया। 2002 से 2015 तक आपने संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रवर्तित "इंटर-गवर्नमेंटल पैनेल ऑन क्लायमेट चेंज" के अध्यक्ष के

रूप में कार्य किया। इस संगठन को जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य हेतु 2007 में शांति का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया। भारत सरकार ने भी आपको पर्यावरण के क्षेत्र में सराहनीय भूमिका के लिये पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। आपने इंडियन ऑयल कारपोरेशन के अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं।

• पराक्रम एवं वीरता

युद्ध के क्षेत्र में भी रेलवे के कर्मचारियों द्वारा सशस्त्र बलों को गोला-बारूद एवं हथियारों की आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु हमेशा अपनी जान की बाजी लगाई गयी है। इसी प्रकार के एक वाकिये में 1965 के भारत-पाक युद्ध के समय बाड़मेर में 17 रेल कर्मचारियों ने भारतीय सेना के लिए हथियार, गोला-बारूद एवं राशन की आपूर्ति करते समय अपने प्राणों की आहुति दी थी। रेल सुरक्षा बल के 14 जवान और मुख्य लोको पायलट श्री माधोसिंह गहलोत 10 सितम्बर, 1965 को जब भापचालित लोकोमोटिव के साथ 6 वैगनों में रेलवे का गोला-बारूद लेकर जा रहे थे तब पाक वायु सेना के लड़ाकू विमान के द्वारा गद्रा रोड स्टेशन के निकट बमबारी में ट्रेन को निशाना बनाया गया। इस हादसे में श्री माधोसिंह जिनका इस दुर्घटना के समय विवाह हुए केवल 18 दिन हुए थे, का शरीर भी प्राप्त नहीं हो सका। इंजन के बॉयलर में विस्फोट के कारण 6 कर्मचारियों के शव प्राप्त नहीं हो सके थे। इसलिए इन शहीद कर्मचारियों की याद में उतर पश्चिम रेलवे द्वारा एक स्मारक का निर्माण भी किया गया है। जहाँ बमबारी में ट्रेन नष्ट हो गई थी,

आज भी उनके सम्मान में उस स्थान से गुजरने वाली ट्रेनें अपनी गति या तो कम कर लेती हैं या रूक कर आगे बढ़ती हैं। इसी प्रकार 1971 के भारत पाक युद्ध के समय प्रादेशिक सेना की 472 रेलवे इंजी. रेजीमेंट जिसका नेतृत्व कमांडर श्री वी.पी. गोले कर रहे थे। इनके नेतृत्व में 360 ट्रेनों का परिचालन फरीदपुर, खुलना, बॉनगाँव तथा रंगगाँव आदि खण्डों में किया गया। इस साहसिक कार्य के लिए श्री पी.वी. गोले जो कि भारतीय रेल यातायात सेवा के अधिकारी थे, उनको परम विशिष्ट सेवा मेडल प्रदान किया गया। आप बाद में बिग्रेडियर के पद तक पहुँचे। आपके द्वारा एयर इंडिया के निदेशक के रूप में भी कार्य किया गया। सेवा निवृत्ति के उपरांत आपने पुणे में एक एन.जी.ओ. स्थापित किया जिसका उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को शिक्षा के अवसर प्रदान करना था।

• पद्म पुरस्कार

ई.श्रीधरन भारतीय रेल अभियांत्रिकी सेवा के अधिकारी रहे हैं। वे 1995 से 2012 तक दिल्ली मेट्रो के प्रबंध निदेशक रहे। उन्हें भारत के "मेट्रो मैन" के रूप में भी जाना जाता है। भारत की पहली सर्वाधिक आधुनिक रेलवे सेवा कोंकण रेलवे के पीछे आपका प्रखर मस्तिष्क, योजना और कार्यप्रणाली रही है। कोलकाता मेट्रो के निर्माण में भी उप मुख्य डिज़ाइन इंजीनियर के रूप में आपने अपना योगदान दिया। भारत सरकार ने उन्हें 2001 में "पद्मश्री" तथा 2008 में "पद्म विभूषण" से भी सम्मानित किया। 2013 में फ्रांस के राष्ट्रीय सम्मान "ऑर्डर ऑफ द राइजिंग सन-गोल्ड एंड सिल्वर स्टार" से भी सम्मानित किया गया। टाइम मैगजीन के द्वारा भी आपको 2003 में एशिया के हीरो की सूची में शामिल किया। आपने बहुत कम समय के भीतर दिल्ली मेट्रो के निर्माण का कार्य किसी सपने की तरह बेहद कुशलता और श्रेष्ठता के साथ पूर्ण किया। श्रीधरन की कार्यशैली की सबसे बड़ी खासियत

है कि एक निश्चित योजना के तहत निर्धारित समय सीमा के भीतर काम को पूरा कर दिखाते हैं। समय के बिल्कुल पाबंद श्रीधरन की इसी कार्यशैली ने भारत में सार्वजनिक परिवहन का चेहरा ही बदल दिया। आप माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के सदस्य भी हैं तथा संयुक्त राष्ट्र महासचिव की उच्चस्तरीय सलाहकार समिति के भी अंग रहे हैं। आपके विषय में एक अन्य दिलचस्प तथ्य यह है कि भारत के प्रसिद्ध नौकरशाह एवं चुनाव आयोग के माध्यम से चुनावों को स्वच्छ बनाने वाले श्री टी.एन. शेषन आपकी पाठशाला के सहपाठी रहे हैं।

श्री श्यामल भूषण घोष दस्तीदार भारतीय रेल यातायात सर्विस के अधिकारी रहे हैं। आप रेलवे में सदस्य यातायात के पद से सेवा निवृत्त हुए जो कि भारत सरकार के सचिव के समकक्ष पद है। आपको लोक सेवा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिए वर्ष 2009 में भारत के चतुर्थ सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार, डॉ सुश्री आनन्द शंकर जयंत के पिता भी भारतीय रेलवे में अधिकारी थे। आप भारतीय रेल यातायात सेवा की अधिकारी हैं। आप ने अपने किशोरवय में रुक्मिणी देवी अरुंडेल के संस्थान से भरतनाट्यम का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आप एक दक्ष कुचिपुडी नृत्यांगना भी हैं। आप ने स्वयं भी हैदराबाद में एक नृत्य अकादमी "शंकरानन्द कला क्षेत्र" के नाम से स्थापित की है। आप को कला के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए 2007 में "पद्मश्री" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको तमिलनाडु सरकार के द्वारा "कलाममानी" पुरस्कार एवं आन्ध्रप्रदेश सरकार के द्वारा "कला रत्न" सम्मान से भी विभूषित किया गया है। आपको संगीत नाट्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है।

• राजनीति

श्री तथागत राय राजनीति में आने के पूर्व भारतीय रेल अभियांत्रिकी सेवा के अधिकारी थे।

श्री तथागत राय ने वर्ष 2015 में त्रिपुरा के राज्यपाल और उसके बाद मेघालय के राज्यपाल पद को भी सुशोभित किया है। रेल सेवा में आपने महाप्रबंधक/ राइट्स एवं मुख्य इंजी.-डिजाइन के रूप में मेट्रो रेल कोलकाता में भी अपनी सेवाएं प्रदान की थीं। आपने 45 वर्ष की उम्र में रेल सेवा से त्याग पत्र दिया। आपने बंगाली एवं अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें भी लिखीं। भारतीय रेलवे अकाउंट्स सर्विस अधिकारी श्री एम. ए.के. स्वैन ने दक्षिण पूर्व रेलवे के चक्रधरपुर एवं बिलासपुर मंडलों में कार्य किया और 1998 में रेल सेवा से त्याग पत्र देकर आपने अनेकों बार लोकसभा चुनावों में उड़ीसा से विजय प्राप्त कर उड़ीसा तथा अपने संसदीय क्षेत्र की समस्याओं के निराकरण तथा संसद की अनेक समितियों की अध्यक्षता करते हुए लोकसेवा के क्षेत्र में सेवाएं प्रदान की।

पाकिस्तान के तृतीय गवर्नर जनरल श्री गुलाम मोहम्मद आज़ादी के पूर्व भारतीय रेलवे में इंडियन रेलवे अकाउंट विभाग में अधिकारी थे। आपने जगतराय महिन्द्रा के साथ "महिन्द्रा एवं मुहम्मद" कंपनी बनाई जो देश विभाजन के बाद "महिन्द्रा एवं महिन्द्रा" के नाम से प्रसिद्ध है।

• साहित्य एवं फिल्में

श्री विमल मित्रा बंगाली के ख्यात नाम लेखक रहे हैं। वह रेलवे के चक्रधरपुर मंडल में उप मुख्य कंट्रोलर के पद पर कार्यरत रहे हैं। आपने बिलासपुर मंडल में भी काफी समय तक कार्य किया। 38 साल की उम्र में आपने साहित्य-सृजन के लिए रेल सेवा से त्याग पत्र दिया। भारतीय सिनेमा की कालजयी कृति "साहिब बीबी और गुलाम" एवं "मुजरिम हाज़िर" जैसे टीवी धारावाहिक आपकी प्रसिद्ध कृतियों पर आधारित हैं। मशहूर फिल्मी गीतकार शैलेन्द्र भारतीय रेलवे की माटुंगा वर्कशॉप में अप्रेंटिस के रूप में कार्यरत रहे हैं और आपने अनेक फिल्मी गीतों का सृजन किया। इससे पूर्व आपने मथुरा में रेलवे लाइन एवं 27 रेलवे क्वार्टर

के बीच स्थित तालाब-किनारे बैठ कर काव्य-रचना सीखी। राजकपूर की फिल्मों के लिए लिखे गये आपके गीत अत्यन्त प्रसिद्ध रहे हैं तथा उनके द्वारा निर्मित चलचित्र "तीसरी कसम" भारतीय फिल्म इतिहास की कालजयी कृति के रूप में जानी जाती है। श्री श्याम सुन्दर बेसरा पूर्व रेलवे के आसनसोल मण्डल में मुख्य टिकट निरीक्षक पद पर कार्यरत रहे हैं। आप संथाली व हिन्दी में लिखने वाले प्रसिद्ध लेखक हैं जिनको साहित्य अकादमी पुरस्कार वर्ष 2018 में कृति "मारोम" के लिये प्राप्त हुआ। इसी प्रकार टी.डी. रामकृष्णन मलयालम के नामचीन उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। आपने दक्षिण रेलवे के पालघाट मंडल में टिकट निरीक्षक एवं मुख्य नियंत्रक के रूप में कार्य किया। आपके द्वारा मलयालम में लिखे गये दो उपन्यास 'बेस्ट सेलर' श्रेणी में रखे गये।

आपको केरला साहित्य अकादमी का पुरस्कार तथा प्रसिद्ध "व्यालार पुरस्कार" भी प्राप्त हुआ। सुश्री नीलम सक्सेना चन्द्रा भारतीय रेलवे इंजी. सर्विस की वरिष्ठ अधिकारी के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। इनके चार उपन्यास के अलावा अनेक कथा एवं काव्य-संग्रह और बच्चों की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सृजन कार्य के लिए आपको अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। इसी प्रकार श्री आनन्द शुक्ला भारतीय रेल यातायात सेवा के अधिकारी रहे हैं। आप अपर महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। आपने अनेक पुस्तकों का सृजन किया जो साहित्य एवं प्रबंधन से सम्बन्धित हैं। आपकी नाट्यकृति "ताजमहल का टेन्डर" का मंचन हमेशा देशभर के कलाकर्मियों की पहली पसंद रही है। आपको साहित्य कला परिषद पुरस्कार, साहित्य कला परिषद राष्ट्रीय पुरस्कार एवं मोहन राकेश सम्मान भी प्राप्त हुआ। श्री के. विक्रम सिंह भारतीय रेल यातायात सेवा के अधिकारी थे।

जिन्होंने बाद में फिल्म डिवीजन के लिए अनेक डाक्युमेंट्री फिल्मों का निर्माण किया। आपके द्वारा निदेशित एवं निर्मित हिन्दी फीचर फिल्म "तर्पण" को अनेक अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दिखाया गया तथा इसने अनेक पुरस्कार अर्जित किये।

• समाज सेवा एवं सिविल सर्विस

डॉ. जगदीप छोकर रेल सेवा में भारतीय रेल यांत्रिक सेवा अधिकारी के रूप में कार्य करते रहे हैं। अनेक पदों पर कार्य करने के उपरांत आपने रेल सेवा से त्याग पत्र दिया तथा उसके बाद आपने वर्ष 1999 में एक "एसोसियेशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म" नाम की अशासकीय संस्था का गठन किया। यह संस्था देश में चुनावी राजनीति को साफ-सुथरा बनाने के लिए कार्यरत है। यह संस्था आम मतदाताओं को जागरूक करने की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है। ये चुनाव लड़ने वाले राजनेताओं की आय, संपत्ति, आपराधिक मामलों आदि की जानकारी निष्पक्ष रूप से जनता के समक्ष रखती है। श्री अश्विनी लोहानी "स्पेशल क्लास रेलवे अप्रैटिस" के रूप में भारतीय रेलवे से जुड़े तथा आपने भारतीय रेल यांत्रिक सेवा अधिकारी के रूप में अनेक स्तरों पर अपनी सेवाएं दीं। अन्त में अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड के पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में आप एयर इंडिया के अध्यक्ष सहप्रबंधक निदेशक के रूप में कार्यरत हैं।

आपको शासकीय संस्थाओं को पुनर्जीवन देने के लिए जाना जाता है। भारतीय पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष सह प्रबंधन निदेशक तथा मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग के प्रबंध निदेशक के रूप में आपके नेतृत्व ने इन संस्थानों को पुनर्जीवन प्रदान किया है। आपने राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान नई दिल्ली में रेल यातायात को सुचारू रूप से चलाने में दक्षता पूर्वक सराहनीय कार्य किया। आपका नाम "लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड" में चार विषयों में अभियांत्रिकी की स्नातक उपाधि प्राप्त करने के लिए दर्ज है।

• उद्योग जगत

श्री पी.सी. सेन स्पेशल क्लास रेलवे अप्रैटिस के रूप में भारतीय रेल से जुड़े। आपने रेल सेवा से कनिष्ठ प्रशासनिक स्तर के पद पर रहते हुए उद्योग जगत से जुड़ने हेतु त्यागपत्र दिया। आप बाद में पीयरलेस जनरल फायनेंस एवं इश्योरेंस कंपनी के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक के पद तक पहुंचे। जो देश में निजीकरण के पूर्व देश की सबसे बड़ी निजी इश्योरेंस कंपनी थी। आपने बर्न स्टैंडर्ड कंपनी, बंगाल केमिकल एवं वेस्टिंगहॉउज सेक्सबे फार्मर आदि कंपनियों के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। आप औद्योगिक समूहों के विविधता तथा रणनीतिक दूरदृष्टि के साथ विकास के लिये जाने जाते थे।

• आध्यात्म एवं दर्शन

जमालपुर में पूर्व रेलवे का एक वर्कशॉप था। इसके कर्मचारियों में एक नाम था श्री प्रभात रंजन सरकार का, जो लेखा विभाग में कार्यरत थे। बाद में श्री पी.आर.सरकार लोकप्रिय नाम आनंद मूर्ति बाबा के रूप में देशभर में प्रसिद्ध हुए। वे एक आध्यात्मिक गुरु, आधुनिक लेखक, भारतीय दार्शनिक, सामाजिक विचारक, योगी, कवि एवं संगीतकार थे। आपके द्वारा आनंद मार्ग प्रचारक संघ की नींव रखी गई। इसको मानने वाले बाबा को शिव और कृष्ण का अवतार मानते थे। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने पी.आर. सरकार को "भारत के सबसे महान आधुनिक दार्शनिकों" में से एक बताया था। यह व्यक्ति लोगों को "आनंद मार्ग" पर चलने का ज्ञान देता था।

• कला एवं ज्ञान

विगत वर्ष नागपुर मंडल में चल टिकिट निरीक्षक के पद पर कार्यरत श्री बिजॉय बिस्वाल

की भारतीय स्टेशनों के प्लेटफॉर्मों पर जिदगी के पहलू दिखाती सजीव पेंटिंगों ने सबको मोहित कर लिया था। इसी प्रकार दक्षिण पूर्व रेलवे के आद्रा मंडल में कार्यरत वरिष्ठ अनुभाग इंजी. श्री गौतम कुमार झा वर्ष 2019 में "कौन बनेगा करोड़पति" के भारतीय टी.वी. पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम में 1 करोड़ रुपये का ईनाम जीतने में कामयाब रहे। इस प्रकार आपने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, मेधा एवं ज्ञान का परिचय दिया।

• रेल परिवार के अभिन्न अंग

इस तरह के कई ऐसे प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं जिनका रेलवे से जुड़ाव या तो अपने पालकों के कारण है अथवा उन्होंने रेल कर्मचारियों के हित में सराहनीय कार्य किया है। इनमें श्री विश्वनाथन आनंद, विश्व शतरंज चैम्पियन रहे, जिनके पिता श्री के. विश्वनाथन दक्षिण रेलवे के महाप्रबंधक रहे हैं। इसी तरह भारत की मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव रहे। श्री प्रकाश करात के पिता बर्मा रेलवे में लिपिक के पद पर कार्यरत थे। उस समय बर्मा रेलवे भारतीय रेलवे का एक भाग हुआ करता था। इसी प्रकार बैडमिंटन विश्व चैम्पियन श्री पी.वी.सिंधु के पिता श्री पी.वी.रमन्ना एवं माता श्रीमती पी.विजया दोनों दक्षिण मध्य रेलवे के कर्मचारी रहे हैं एवं जाने माने वॉलीबॉल खिलाड़ी भी रहे हैं। केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव के पिता श्री कदम सिंह यादव अजमेर में रेलकर्मि रहे हैं। उत्तराखण्ड के निवर्तमान मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत भी रेलकर्मि के पुत्र हैं। आपके पिता कलम सिंह रेलवे के केरिज एवं वैगन विभाग में फिटर के पद पर सेवारत थे। रेलवे की मान्यताप्राप्त फेडरेशन, ऑल इंडिया रेलवेमेन्स फेडरेशन के 1947 से 1953 में अध्यक्ष, देश में संपूर्ण क्रांति के प्रणेता लोकनायक जयप्रकाश नारायण और उनके साथ

इसी प्रकार जार्ज फर्नांडिस जो भारत के रेल मंत्री और ऑल इंडिया रेलवे मेन्स फेडरेशन के अध्यक्ष भी रहे हैं। सन् 1974 में हुई रेल हड़ताल में आपकी मुख्य भूमिका थी। रेल कर्मचारियों के कल्याण के लिए आपने कई सराहनीय कदम उठाए। श्री ठक्कर बापा जो कि आजादी के पूर्व समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत थे उनके द्वारा वनवासियों एवं सफाई कर्मचारियों के हितों के लिए काफी प्रयास किये गये। आप सर्वेन्ट आफ इंडिया सोसायटी के माध्यम से समाज सेवा से भी जुड़े रहे। आप सिविल इंजी. थे तथा युगाण्डा में पहली रेल लाईन बिछाने में आपका अप्रतिम योगदान रहा है।

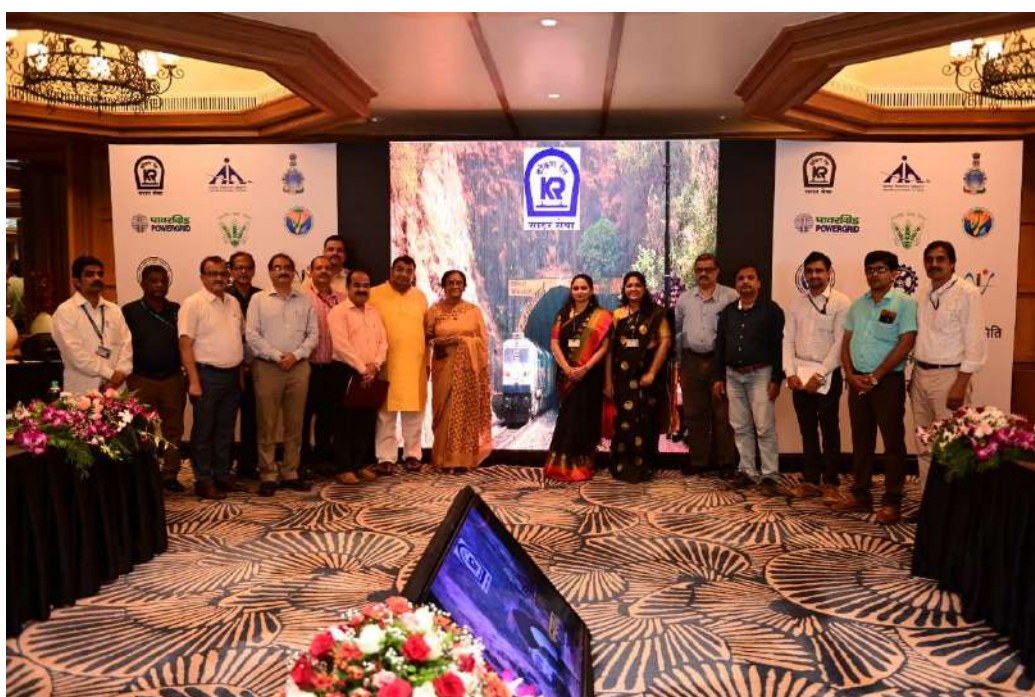
-----०००००-----

प्रज्ञेश वी. निंबालकर
उप मुख्य यॉत्रिक इंजी.-(द्वितीय)
वैगन रिपेयर शॉप, कोटा

अपने ज्ञान पर जरूरत से अधिक यकीन करना मूर्खता है, यह याद दिलाना ठीक होगा की सबसे मजबूत कमजोर हो सकता है और सबसे बुद्धिमान गलती कर सकता है।

-महात्मा गांधी

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा मडगांव रेलवे स्टेशन, कोंकण रेलवे की निरीक्षण संबंधी बैठक के दृश्य



राजभाषा की गरिमा अद्भुत और अनोखी है

- कविता -

रेल राजभाषा की गरिमा अद्भुत और अनोखी है
ज्ञान और विज्ञान प्रदात्री सुरुचिपूर्ण यह देखी है,

भारत के उत्तर दक्षिण पुरब पश्चिम के मूल्य परम
इसमें बड़े सलीके से हैं भावों के उत्कर्ष चरम,

राष्ट्र-एकता के प्रसून को यह अपने में बांधे है
भारतीयता के प्रणधन को यह अपने में साधे है,

करती है उपकार सभी का नहीं करे अनदेखी है
रेल राजभाषा की गरिमा अद्भुत और अनोखी है,

यहां विचारों की गरिमा है, आगे बढ़ने की बातें
सामाजिक सद्भाव हेतु चिन्तन की सुन्दर सौगातें,

यहां बेटियों की पुकार, महिलाओं का सम्मान यहां
मानव को मानव बनने का नैतिक ललित विधान यहां,

भारतीय हैं एक सभी यह सबको जनवा देती है
रेल राजभाषा की गरिमा अद्भुत और अनोखी है,

रेल राजभाषा प्रबुद्ध करती अपने सुविचारों से
हस्त-आमलक प्रकृति दृश्य देती मनहर उद्गारों से,

समय साधना का सुबोध देने का यह शुभ चिन्तन है
हर्षोल्लास पूर्ण आनन्दित करती सबका जीवन है,

संस्कार संस्कृति प्रबोधिका नीतिदायिनी नेकी है
रेल राजभाषा की गरिमा अद्भुत और अनोखी है

रेल राजभाषा दुनिया में अपना परचम फैलाती
एक बनो सब नेक बनो सब, सही भाव यह दर्शाती,

सारी भाषाओं को समबल देती अन्तस् हर्षाती
हिंदी बने राष्ट्र की भाषा प्रण यह जन जन में लाती,

अतुल प्रभावी अनघ पत्रिका ऐसी अन्यन देखी है
रेल राजभाषा की गरिमा अद्भुत और अनोखी है,

डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त,
सेवानिवृत्त प्राध्यापक (संस्कृत)
सिविल लाइन्स, दतिया (म.प्र.)-475661